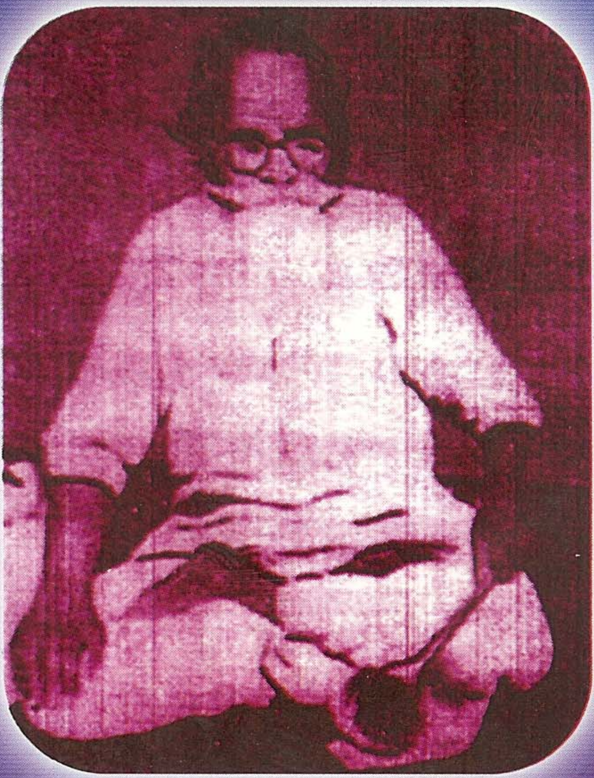
महीपाल



डॉ. एच. एन. सिंह

महीपाल

सम्पादक

डॉ. एच. एन. सिंह

प्रकाशक

कुरमाली भाषा परिषद्, राँची

महीपाल (गीत-संग्रह)

चित्रकार : चण्डी प्रसाद महतो (कांसरा)

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2013

मूल्य : 130/-

प्रकाशक : कुरमाली भाषा परिषद्, राँची

मुख्य वितरक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न. डी. जी. 03 न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट
रातू रोड, राँची 834001 (झारखंड)
मो. 9835718589

<u>*Mahipal - Edited by H. N. Singh*</u>

जीवन-परिचय

संत कवि महीपाल का जन्म रांची जिले के पूर्वांचल स्थित सिल्ली थानान्तर्गत पहाड़-जंगल-वनों से आच्छादित एक अत्यन्त रमणीय स्थल नागेडीह नामक गांव में सन् 1905 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम शिबू महतो और माता का नाम मिनी देवी था। तत्कालीन प्रचलित सामाजिक प्रथानुसार इनका विवाह बचपन में ही पारता देवी के साथ हुआ था, जिसे प्यार से लोग पुतुना के नाम से पुकारते थे, जो बांसटोला (बाम्हनी) गांव की थी,

महीपाल के व्यक्तित्व में गुण-अवगुण दोनों ही परिदर्शित होते हैं। उनके प्रारम्भिक जीवन के संबंध में कई प्रकार की घटनाएँ कही-सुनी जाती हैं। एक दिन की बात है कि वे लोटा गांव से अपने घर आ रहे थे। उस समय आज की भांति यातायात याने सड़क-मार्ग की सुविधाा नहीं थी। मेंड़ (आड़) पर चलकर रास्ता तय किया करते थे। वे खेत की आड़ पर चल रहे थे कि अचानक आड़ से फिसल कर गिर गए। उनके शरीर और चेहरे पर काफी चोटें आयीं। जब लोटा गांव से लौट रहे थे तो किसी ने उन्हें एक आइना (दर्पण) भेंट-स्वरूप दिया था। वे अपने गांव के निकट ही आड़ से गिरे थे। ऐसा कहा जाता है कि घर वालों या गांव के किसी आदमी ने उन्हें गिरते भी देखा था। वे दौड़कर उनके पास गए और उन्हें उठाकर घर ले आए। उन्हें भेंट स्वरूप जो आइना मिला था, उसमें उन्होंने अपना चेहरा देखा। अपने विकृत चेहरे को देखकर उन्होंने शराब पीना सदा के लिए परित्याग करने का निश्चय किया। अब उन्होंने शराब के बदले पान खाना प्रारम्भ किया। कवि का मानना था कि इसी दर्पण के कारण उसने जीवन दिशा बदल गई। अत: वे दर्पण को ही गुरू-सदृश मानने लगे जिसके कारण अचानक उनकी जिन्दगी में परिवर्तन आया। जो दर्पण उन्हें भेंट स्वरूप मिला था, यद्यपि वह टूट गया फिर भी उस दर्पण का फ्रेम अबतक उनके घर में सुरक्षित है।

एक जनश्रुति यह भी है कि एक दिन वे लोटा गांव से ढप बजाते हुए अपने गांव की ओर जा रहे थे कि रास्ते में एक बाघ ने उनका रास्ता छेंक लिया। जब दोनों आमने-सामने हुए तो डर से इनके हाथ से ढप बजाने वाली बांस की पिरपिटी जमीन पर गिर गई। उन्होंने उस पिरपिटी को अपने पांव से ही उठाया और बाघ से कहा - 'चलो, तुम मुझे गांव पहुंचा दो।' संयोग की बात है कि महीपाल और बाघ दोनों ही समानान्तर में गांव की ओर जाने लगे। जब वे गांव पहुंचे, तो वे अपने कोई रिस्तेदार के घर दौड़कर घुस गए और बाघ जंगल की ओर चला गया। यह घटना अब तक जन-जन में प्रचलित है।

कवि के संबंध में कहा जाता है कि जिस प्रकार कोई बारह वर्षो तक उन्होंने शराब का सेवन किया, उसी प्रकार लगभग बारह वर्षो तक पान का भी सेवन करते रहे। इसके बाद वे पान-सेवन का परित्याग कर गांजा का व्यवहार करने लगे। एक विलक्षण बात यह है कि जिस प्रकार वे बारह वर्षो तक शराब, फिर बारह वर्षो तक पान का सेवन, उसी प्रकार बारह वर्षों तक गांजा, त्रिफला चूर्ण एवं तम्बाकू का व्यवहार करते रहे। जिन वस्तुओं के वे आदी थे, उन वस्तुओं को वे सदैव अपने पास रखते रहे। जब तक पान का सेवन करते रहे, तब तक पान में व्यवहार होने वाली सारी सामग्रियां उनके पास हुआ करती थीं। हरतकी, सुपारी आदि काटने के लिए वे सदैव अपने पास एक सरौता (जांती) रखा करते थे। बुरी

आदतों का परित्याग करने के साथ-साथ उन्होंने मांस-मछली खाना भी छोड़ दिया।

कवि महीपाल ने कब गुरू-दीक्षा ली, कहना कठिन है। लेकिन बताया जाता है कि उनके गुरू का नाम रिदास बाबाजी था। खलारी गांव के बलराम साधु उनके मामा थे। बलराम साधु भी एक सिद्ध पुरूष थे। इलाके में उनकी काफी प्रसिद्धि थी। उन्होंने ही महीपाल को रिदास बाबाजी से परिचय करवाया था। कहा जाता है कि महीपाल कवि ने जिन गुरू के आश्रम में रहकर शिक्षण प्राप्त किया था, उस आश्रम के गुरू ने मृत्यु-पूर्व अपनी पत्नी से कहा था कि ''मेरे निधन के बाद मेरा जैसा एक साधु इस आश्रम में आयेगा, उसे मेरी ये तीन चीजें उन्हें सौंप देना।'' ये सामग्रियाँ थीं- तुरही, पैजनी और मंत्र की पोथी। अपने गुरू के परलोक गमन के पश्चात् जब महीपाल उनके यहां गये तो गुरूमाता ने ये तीनों चीजें उनको (महीपाल) सौंप दिया।

गुरू-मंत्र के प्रति महीपाल का विशेष आग्रह था। उनका मानना था कि जिस व्यक्ति ने गुरूमंत्र नहीं लिया है, उस व्यक्ति के हाथों पानी ग्रहण नहीं करना चाहिए। वे भी ऐसे व्यक्ति के दिए हुए वस्तुओं को ग्रहण करने में परहेज करते थे, जिसने गुरू-मंत्र नहीं लिया हो। वे कहा करते थे कि ऐसे व्यक्ति के हाथों पानी ग्रहण करने पर नरक की प्राप्ति होती है। वे अपनी गुरूमाता प्रदत्त तुरही सदा अपने साथ रखा करते थे। जब वे किसी दूसरे गांव की सीमा पर पहुंचते, तो उस गांव में प्रवेश करने के पूर्व तुरही बजाया करते थे, ताकि गांव वालों को मालूम हो जाए कि गांव में कोई नया आगन्तुक आया है।

महीपाल का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे गीतों के अनन्य रचनाकार तो थे ही, साथ-साथ एक कुशल नर्तक भी। कुरमाली समाज में प्रचलित पारम्परिक नृत्य एवं वाद्य कला में भी निपुण थे। वे पांता नृत्य के एक अच्छे कलाकार थे। छौ-नृत्य के भी एक कुशल कलाकार माने जाते थे। वे गांव के लड़कों को छौ-नृत्य का प्रशिक्षण भी दिया करते थे। उनके छौ-नृत्य के गुरू बनु बाबू थे। तत्कालीन समाज में प्रचलित नर्तकी नृत्य (नचनी नाच) में भी पारंगत थे। वे कीर्तन भी करते थे। यही नहीं, बल्कि कीर्तन के उस्ताद भी थे। जहां तक वाद्य-कला की बात है। इस संबंध में इतना ही कहा जा सकता है कि वे एक ओर ढप बजाने में माहिर थे, तो दूसरी ओर ढोल बजाने की कला में निष्णात। संगीत के अतिरिक्त वे ओझा-गुणी का भी काम किया करते थे। अपने शिष्यों को वे ओझा-गुणी की कला जीवन के अंतिम क्षणों तक सिखाते रहे। जो मंत्र सिखाते थे, वे सारे मंत्र कैथी लिपि में लिखे हुए हैं, और परिवार के पास अब तक सुरक्षित है।

एक समय की घटना है कि वे नर्तकी-नृत्य के लिए जगदयाल महतो के साथ गोड़ाडीह गांव गये थे। जब वे दोनों वहां से लौट रहे थे, तो रास्ते में दोनों के बीच ढोल बजाने की प्रतियोगिता की बात होने लगी कि किसका ढोल अच्छा बजता है। इस बात को लेकर दोनों में राय बनी कि वे अपना-अपना ढोल पानी में डूबो दें और उसके बाद अपने-अपने ढोल को बजाएं। जिसका ढोल अच्छा बजेगा, उसकी ही जीत होगी। इस प्रतियोगिता में महीपाल हार गए, क्योंकि उनका ढोल बैठ गया था।

महीपाल बड़े मजाकिया स्वभाव के थे। वे सदा प्रसन्न चित रहा करते थे। उनका एक स्वभाव यह भी था कि घर में किसी वर्तन को रिक्त (खाली) देखना पसन्द नहीं करते थे, जैसे- लोटा, बाल्टी आदि। संयोगवश यदि उन्हें कोई वर्तन खाली दिखाई पड़ा तो

वे आवेश में आ जाते और उन खाली वस्तुओं को फेंकने लगते।

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि कवि महीपाल का गुरूमंत्र के प्रति विशेष आग्रह था, उन्होंने अपने जीवन-काल में अनेक लोगों को गुरू मंत्र दिया है। उनके शिष्य कोका लगाम, पारडीह, इदायसुरु, हाराहारा मठारी, कालीमाटी, रतियाडीह, नवाडीह, बिन्दीटांड़, टुनकू, झाबरी, जोजोहातु आदि गांवों में थे, और अभी भी हैं। उनके शिष्य प्रत्येक वर्ष बैसाख पूर्णिमा में महिष छौ (साधुनाथ) का आयोजन कवि के गांव में करते आ रहे हैं। सम्प्रति उनके शिष्यों में राखाल महतो (झाबरी), रतना काली बजर (रतियाडीह), गणेश महतो(पारडीह), राधानाथ महतो (बिन्दीटांड़), श्री हरि महतो (काली माटी), भोला महतो (जोजोहातु) आदि हैं।

कवि के दो पुत्र और एक पुत्री हैं। बड़े पुत्र का नाम गौर चन्द्र महतो (अब स्वर्गीय) और दूसरे पुत्र विद्याधर महतो है। पुत्री का नाम रम्भा देवी है। एक पोते का नाम बाबू सिंह महतो है।

संत कवि महीपाल को अपने मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। उन्होंने अपने बेटों से कहा- 'अब मुझे इस दुनिया में नहीं रहना है, मेरा जाने का समय आ गया है। 'कुरमाली साहित्याकाश का यह जाज्वल्यमान नक्षत्र सदा के लिए 13 जुलाई (शुक्रवार) 1979 को अस्त हो गया।

कुरमाली के मध्यकालीन कवियों एवं आधुनिक काल के प्रारम्भिक रचनाकारों की कितनी रचनाएं हैं, उनका जीवन-वृत्त क्या है? उनका काव्य-विषय क्या रहा है? इसका सटीक प्रमाण अब तक अनुपलब्ध है। यह तथ्य भी संत कवि महीपाल के संबंध में घटित होता है। उनकी रचनात्मक उपलब्धियों का कोई व्यवस्थित संकलन आजतक प्रकाशित नहीं हुआ है। उनके गीत जन-जन में बिखरे हुए हैं। लोगों का कहना है कि कुछ गीतों को उनके शिष्यों ने 'धर्मशास्त्र संगीत' और 'संगीतसुधा' के नाम से प्रकाशित करवाया है। 'धर्म शास्त्र संगीत' में कितनी रचनाएं हैं, सम्पादक और प्रकाशक कौन है? किस वर्ष प्रकाशित हुई, ये तथ्य उपलब्ध नहीं हैं। इसी प्रकार 'संगीत सुधा' नामक गीत संग्रह कवि के शिष्य श्री रमेश चन्द्र मिश्र और श्री विद्याधर महतो ने करवायी है।

प्रस्तुत संग्रह में संत कवि महीपाल द्वारा प्रणीत कुरमाली और बांग्ला गीत हैं। संग्रह में प्रथमतः कुरमाली गीतों को स्थान दिया गया, फिर बांग्ला गीतों को। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। कुछ गीत हिन्दी में भी हैं और इस संग्रह में समाहित है। वर्ण्य-विषय की दृष्टि से विचार किया जाए तो कहा जा सकता है कि उनके गीतों में एक ओर प्रेम और वेदना का मार्मिक चित्रण है, तो दूसरी ओर प्रवचन और भक्ति के तत्त्व की भी प्रचुरता है। अधिकांश गीतों में आध्यात्मिक उत्थान पर जोर दिया गया है। निश्चय ही उनकी रचनाएं कुरमाली साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

प्रायः देखा जाता है कि पूर्व के कुरमाली रचनाकारों ने अपने गीतों में कोई शीर्षक नहीं दिया है। उसी परम्परा में कवि महीपाल भी हैं। पाठक की सुविधा के लिए कवि के गीतों में शीर्षक के रूप में धुवा की पंक्ति या गीत की प्रमुख पंक्ति को व्यवहृत किया गया है। जहां तक काव्य-विषय का प्रश्न है, तो इस संबंध में कहा जा सकता है कि भक्ति, आध्यात्म, शिक्षा, नीति, चेतावनी, साम्प्रदायिक एकता, भाई-चारा, कृषि, अकाल, प्राकृतिक

आपदादि काव्य–विषय रहे हैं। कवि महीपाल ने अपने एक गीत में अपना परिचय इस प्रकार दिया है–

सिल्ली थाना जिला राँची, नागेडीह मर घार हेकी
किनालाइ भाई डाकेइहा मके।
लिखा–पढ़ा नेखेइक पासे,
मोंय आहों दुरन देसे
किनालाइ भाई डाकेइहा मके।
महीपाल हेके बेड़े बका,
जेसन हेत कुम्हार पका
महा मंतर देहन जाके–ताके,
किना लाइ भाई डाकेइहा मके।

एक अन्य गीत में कवि ने स्वयं को नशाखोर होने की बात कही है। देखिये–

महीपाल रहल बेड़े माताल,
एबे हेला हरिक दयाल।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि महीपाल के गीत एक ओर विषय–वैविध्य लिए हुए है तो दूसरी और उच्य काव्य–मूल्य की दृष्टि अत्यन्त समृद्ध भी।

इस पुस्तक में समाहित गीतों के संग्रहण में कई भाषा–प्रेमियों, कवि के रिस्तेदारों और शिष्यों से अप्रत्याशित सहायता मिली है। श्री मनोज कुमार महतो(बांस टोला गोड़ाडीह) सम्प्रति स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में अध्ययनरत, ने कुछ गीतों के अतिरिक्त संत कवि महीपाल के जीवन से सम्बन्धित कई घटनाओं की जानकारी उपलब्ध करायी हैं, मैं उनका हार्दिक आभार स्वीकार करता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। इसी प्रकार कवि के शिष्य श्री रमेश चन्द्र मिश्र (बूढ़ा बेहरा), सर्वश्री विद्याधर महतो, लखीचरण महतो, कार्तिक महतो, दुखू साधु (सभी नागेडीह), श्री प्राण महतो (दसीमा), नन्द लाल महतो (बांस टोला), श्री बिजराज महतो (कुंदलंग) ने भी खुले मन से कवि के संबंध में जानकारियाँ देकर सहायता की है। मैं उन सब के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला मिश्रा और श्री विजय कुमार जी का नाम कैसे विस्मृत किया जा सकता है, जिनकी सत्प्रेरणा का प्रतिफल है यह पुस्तक। मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

और अन्त में, मैं उन लोक–कलाकारों, लोकभाषा–प्रेमियों एवं नागेडीह के समस्त ग्रामवासियों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी प्रकार की सहायता पहुँचायी है। कुरमाली भाषी समुदाय एवं लोकसाहित्य अध्येता इस पुस्तक का समुचित स्वागत करेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

–एच. एन. सिंह

अनुक्रम

1
मंगलाचरण

पतित पावन गुरू ज्ञान उपदेश
षड़ानन बन्दी माँ गौरी गणेश।
पतित पावन क्षिति ज्ञान उपदेश
पतित पावन गंगा ज्ञान उपदेश।

पतित पावन तेज ज्ञान उपदेश
पतित पावन पवन ज्ञान उपदेश।
पतित पावन गगन ज्ञान उपदेश
पतित पावन ब्रह्मा ज्ञान उपदेश।

पतित पावन हर उपदेश
पतित पावन हरि ज्ञान उपदेश।
पतित पावन इन्द्र ज्ञान उपदेश
पतित पावन रवि ज्ञान उपदेश।
पतित पावन शशि ज्ञान उपदेश

पतित पावन व्यास ज्ञान उपदेश।
पतित पावन शेष ज्ञान उपदेश।
पतित पावन महीपाल उपदेश
षड़ानन बन्दी माँगों गौरी गणेश।

2
जय हरि जय गोविन्द

जय हरि जय गोविन्द गोपाल
देवकी तनय जय नन्द दुलाल।
तू ही स्वर्ग, तू ही मर्त्य, तू ही पाताल
जय हरि जय गोविन्द गोपाल।

तू ही रवि, तू ही शशि, तू ही महाकाल
जय हरि जय गोविन्द गोपाल।

सर्व देवमय हरि दिव्य दयाल
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जपे चिरकाल।
इन्द्र यम वरूण आदि दसोदिक पाल
जय हरि जय गोविन्द गोपाल।
श्री गौरांग नित्यानन्द अद्वैत भूपाल
श्री निवास गदाधर आरऽ महीपाल
जय हरि जय गोविन्द गोपाल।

3
भजो मधुसूदन के

भजो मधुसूदन के हो
दिन में काम धाम
रात्रि में विश्राम
हलका बोझा दिहा प्राण के हो
भजो मधुसूदन के हो।

दिने राइते चिन्ता
कइसे बांचे चिता
मिथ्या आशा करा धन के हो
भजो मधुसूदन के हो।

बाछी-बाछी हरि
मारे घुरी-फेरी
ना चिन्हे गरीब किसान के हो
भजो मधुसूदन के हो।

महीपाले आसी
भाभे दिवा-निशि
खोजी ना पावों सिदाम के हो
भजो मधुसूदन के हो।

4
सीखा रे भाई गुरू–मंत्र

हरि शंकर भजऽ मनवा
दिवा–निशि काशीर जरि गेला तनवा
देखा रे भाई खाते–पीते
घेरी लेला कफे वाते

दिवा–निशि कासी–कासी
जरि गेल तनवा हरि
बाल्यकाले हाँसी–हाँसी
युवा काले लागे फाँसी

बृद्ध काले उर्ध्व निकासी
उठी गेला रे तनवा हरि
हरि नामे महामंत्र
सीखा रे भाई गुरू–मंत्र

सत्य कहे महीपाले
फुंकाइ लिहा कानवा
हरि शंकर भजऽ मनवा।

5
आपन भजन कथा

आपन भजन कथा
ना कहिया यथा तथा
आपन के होय सावधान
सुना बोली संत सुजान।

कपूत भाई घनघना
कपूत भाई मुठी चना
कपूत होय अभिमान
सुना बोली संत सुजान।

नाना रकम खाना-पीना
नाना रकम परिधाना
नाना रकम देखे दुई नयान
सुना बोली संत सुजान।

भोग निद्रा जनार्दन
सुन रे पामोरा मन
महीपाले करेला बखान
सुना, बोली संत सुजान।

6

तरा केऊ तऽ कनो कहा

तरा केऊ तऽ कनो कहा, बाकी मोंय तऽ कहों राम
राम जय राम जय राम जय राम। (धुवा)
'रा' कहले हा हेहेइक, करी देखा भाई
'म' कहले कपाट लागेइक पाप नि सामाय।

राम नाम के चाभी लागाई अन्तरेते जपा राम
राम नाम सभकाई कहत ठग ठाकुर आर चोर
बिना प्रेमे रिझत निहीं नन्द किशोर।
एसन तऽ भाई दुर्गन्ध छि: छि: कहत राम

लक्ष्मण के देखाई देलेइक कोटि-कोटि रामा
धन्य हनुमान तके करऽहों प्रणाम।
रोम रोमेते रमे रासे मनोरमे सियाराम
सूर्यवंशे रघुमनी दुर्वादल श्याम

ससऽगड़ा महीपाले कहत मोहिराम।
मन-गुमाने देखी-सुनी, बुझी-सुझी करा काम।

7
आवा न रे भाई, सुना न रे भाई

आवा रे भाई, सुना रे भाई
भेंट मुलाकात करी ले रे भाई
दिन गेले पाछु पछताई।
केवल मुंहेक खाला-खाली
गन्डगले दिन गेली
सुना नऽ रे भाई, महामंत्र कहा सभेकाय।

कखन किना करे हरि,
ना नऽ करा एतेक देरी
सुना नऽ रे भाई सोलह नाम सिखा सभेकाय।

एसन सुन्दर प्रेमऽ,
जेसन कि वृन्दावन
सुना नऽ रे भाई गुरूमंत्र सिखा सभेकाय।

आकाशे पाताले सुना,
महीपाले आना-गना
सुना नऽ रे भाई, संत संग धरा सभे काई।

8
आगुबाटे हरि

आगुबाटे हरि आर पाछु बाटोव हरि
माझे-माझे करत विचारी,
श्याम मुकुन्द मुरारी
श्याम जय गिरिधारी।

नाशा श्रुति काने,
देखे दु नयने चिबुकर सोना मने करी
जठरे बाहरे हृदय माझा रे।

आना-गना करे नर-नारी।
महीपाले नाड़ी देखे करऽ धरी

वाते-पिते-कफे लेला घेरी
आगु बाटे हरि आर पाछु बाटोव हरि।

9

काम-काज खाना-पीना, नदी साले आना-गना

काम-काज खाना-पीना,
नदी साले आना-गना
साले-साले आयु शेष जानो ना
कोथा जाछिस सुन फालोना।

दस साले बाल्येर ह्रास,
बीस साले वृद्धि ह्रास
तीस साले कान्तिर ह्रास जानो ना।
चालीस साले मेदेर ह्रास,

पचास साले तकेर ह्रास
साठी साले दृष्टिर ह्रास जानोना।
सत्तर साले सुक्रेर ह्रास,
अस्सीते विक्रमेर ह्रास

नब्बे साले बुद्धिर ह्रास जानो ना।
सौ साले इन्द्रियेर ह्रास,
सौ दसे मनेरी ह्रास
सौ बीसे जीवन ह्रास थाके ना।

आयुर्वेदिक धन्वन्तरी,
महीपाले करे जोरी।
कि कारने महामंत्र लिलो ना।

10
हरि ऊँ तत् सत्

हरि ऊँ तत् सत् महामंत्र कहा नऽ रे भाई
हरि ऊँ तत् सत् पंचनाम सीखा नऽ रे भाई
हरि ऊँ तत् सत् गुरू मंत्र जपा नऽ रे भाई।

आहोन हेले ना नऽ रगा,
नेखन हेले गुरू के मांगा
मांगेक रकम मांग ले,
परे कही देतन भाई हरि
सत गुरू सत संग करी,
सीखा रे भाई नरऽ नारी।
हर-हरि एकऽता कहत सभेकाई।

माला तिलक दाढ़ी सीखा,
नामावली घेंचाई राखा
ससऽगड़ा महीपाले कहत धेयाई।
हरि ऊँ तत् सत् महामंत्र कहा नऽ रे भाई।

11
नि सारथि के भगवान सारथि

नि सारथि के भगवान सारथि
दुइयो आंइखे देखा पांजी-पथि भाई।
अर्जुनेक अनेक कष्ट,
तबे गानी पावलेक कृष्ट
दुर्योधनेक हरि लेला मति भाई।

कौरव पान्डव युद्ध,
तीन पुरे हेलेक शब्द
पंच भाई रने गेला जीती भाई।

ग्यारह अक्षौहिनी सेना,
कौरव बाटे देखा-सुना
सात अक्षौहिनी सेना,
पांडव बाटे आना-गना
लीला करी गेला यदुपति भाई।
ससऽगड़ा महीपाले,
सुख-दुख जे चिरऽ काले
महामंत्र काने राखा गूंथी भाई।

12
हरि बिना गति नाई

हरि बिना गति नाई भाई, भजा नारायण
भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण।
विप्र अजामिल मने करा भाई
सतत् रहे पापरत अधरम कमाई।
नामे नारायण कही पावल नारायण।
भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण
आरो देखा जगाई-माधाई
पापाचारी रहे दुइयो पापेटा कामाई
नाम जपी के नामी हेलाक पावल रामायण
नाम भजा नाम जपा नाम करा सार
इ संसारे नाम बिना गति निहीं आर
सत गुरू संत संग करी भजा नारायण
ससऽगड़ा महीपाले, नाम भजा चिरकाले
नामे भजन नामे साधन नामे नारायण।
भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण।

13
नाम जपों तरे

मोंय तऽ हरि साराखने नाम जपों तरे
तोर बिना गति निहीं, देखलों मोंय संसारे।
नाम जपों तरे।

स्वर्ग मर्त्य पाताले तऽ तू ही भगवान
पुरुष पश्चिम, उत्तर दक्षिण मध्ये बिराजमान
चारू धारे, चारू कोने देखी ले तोंयों नरे
नाम जपों तरे।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तू ही भगवान
दिने राइते एक धाऊँ हेलोउ करहों तर नाम
कोनो दिन मर छुट्टी नेखी शनिवारे नऽ रबिवारे
नाम जपों तरे।

चारी वेद छह शास्त्र अठारह पुरान
छत्तीस लाख ग्रंथ हरि करले बखान
मोंय सेटा जानम केसे जानेइ कि शिव शंकरे
नाम जपों तरे।

सत्य त्रेता द्वापर कलियुगे भगवान
कने चिन्हें पारेक आरो हिन्दू मुसलमान।
ताकरे खातिर मोंय तऽ हरि बसल आहों एकधारे
नाम जपों तरे।

कलियुगे एक वर्ण हेता जे जखन
कल्कि अवतारे हरि हरि रिबें निधन
ताकर जालांय महिपाले महामंत्र जाप करे
नाम जपों तरे।

14
मोरे हृदय में राम नाम

बैठ गये हो मोरे हृदय में राम नाम
बैठ गये हो
काहाँ बैठे तुलसी, काहाँ बैठे राम
काहाँ बैठे सियाजी, काहाँ हनुमान
मोरे हृदय में राम नाम।

गाल में बैठे तुलसी, मुख में बैठे राम
बाँये बैठे सिया जी, दाहिने हनुमान
मोरे हृदय में राम नाम।

तुलसी दास प्रभु, आस रघुवर के
गुरू के चरणे चिते लाग गये हो
कहत कविराय

सुन भाई साधु कलि काले
महीपाले मुख में बलराम
मोरे हृदय में राम नाम।

15
भोले विराज जी

भोले विराज जी, रामजी
भोले विराज जी,
जय जय अयोध्यापुरी
भोले विराज जी।

भोले विराज जी राम जी
भोले विराज जी।
जय जय राजा जनक पुरी में
भोले विराज जी।
भोले विराज जी राम जी

भोले विराज जी, जय जगन्नाथ पुरी में
भोले विराज जी
भोले विराज जी राम जी
भोले विराज जी, जय काशी बनारसी में
भोले विराज जी
भोले विराज जी राम जी
भोले विराजी, जय तीन पुर महीपाल में
भोले विराजी, भोले विराज जी।

16
कब शरीर बनाया?

कब शरीर बनाया रे भाई, कब शरीर बनाया?
द्वादश दिशा सन्मत लिया, तब शरीर बनाया।
पुरुब को लिया, पश्चिम को लिया, तब शरीर को बनाया।
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...
उत्तर को लिया, दक्षिण को लिया, तब शरीर बनाया
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...।
वायु को लिया, तेज को लिया, तब बनाया रे
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...।
ईशान को लिया नैऋत को लिया, तब शरीर बनाया
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...
गगन को लिया, भुवन को लिया, तब शरीर बनाया
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...।
आकाश को लिया, पाताल को लिया, तब महीपाल आया
द्वादश दिशा को सन्मत लिया, तब शरीर बनाया रे...।

17

कभी नहीं भुलाना

राम नाम का गाना,
कभी नहीं भुलाना
जिन्दगी है दो दिन का।
यही हो देहिया, माटी का लेसना
पानी पड़ले गली जावऽना।
राम नाम का गाना।
राम नाम का गाना
कभी नहीं भुलाना
जिन्दगी है दो दिन का
यही हो देहिया, झाँटी का घड़ना
आगि लागले जरी जावऽना
राम नाम का गाना।
यही हो देहिया, पानी का फकऽना
बूंदा पड़ले फूटी जावऽना।
राम नाम का गाना।
यही हो देहिया, तेल-बातिया
हावा मिलने बूती जावऽना
राम-नाम का गाना।
यही हो देहिया, फटीक का पाखना
मणि मुक्ता टूटी जावऽना
राम नाम का गाना।
यही हो देहिया, गिरबाकर बातिया
महीपाले आना जाना
राम नाम का गाना।
कभू ना भूलना।

18
हरि कीर्तन में

आना रे आना, हमारे भगवान
हमारे घनश्याम, हमारे हरि कीर्तन में
हमारे घनश्याम, हमारे हरि कीर्तन में

आप परभू आना, अर्जुन को लाना
गीता की कथा सुनाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आप परभू आना, गौवों को लाना
आर मीठी-मीठी दूध पिलाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आप परभू आना, बछड़ा को लाना
हरि-हरि घास खिलाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आप आना, राधा जी को लाना
कुंजे-कुंजे रास रचाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आप आना मुरली को लाना
मधुर-मधुर बंशी बजाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आप आना महीपाल को लाना
मधुर-मधुर गाना सुनाना
हमारे हरि कीर्तन में।

आना आना हमारे भगवान
आना आना हमारे घनश्याम।

19

नाम बिना गति नाई

नाम बिना गति नाई भाई जगते,
नाम बिना गति नाई भाई जगते
अनाम नाम दिये रेखेछे भाई जगते।
श्री गुरू गोविन्द हरि, नाम ले भाई नर–नारी
नाम लियाई जा फल पावाई जानेन हरिदासे ते
नाम बिना गति नाई भाई जगते।
सत्संग ना करिले, से नाम कि सहजे मिले?
नामे नारायण आछे, सकल जीवेर उरे ते
नाम बिना गति नाई भाई जगते।
नारद आदि ऋषि जारा, नामेर मरम जाने तारा
जगाई माघाई पापी छिलो, उद्धारिलेन मते
नाम बिना गति नाई भाई जगते।
ना जानीलाम दोहा छन्दा, महीपालेर कपाल मन्दा
माला तिलक दाढ़ी नये डारी आछे घटेते
नाम बिना गति नाई भाई जगते।

20

दिन हेली गतऽ

महामंत्र जाप करा मन, दिन हेली गतऽ
गुरु मंत्र जाप करा मन, दिन हेली गतऽ।
हेलाइं बेला गुचली, कुर गिनी सन नतऽ
दिन हेली गतऽ।
भाव देखी मन, आइ सती एका
भाव देखी मन जरतो एका
माझा–माझी टाना–टानी जमालय जाइकता।
सुमति संग स्वर्ग जाबे,

कुमति संग नरके जाबे
विपती संग कारागारे बांधे मोर जमदूता।
सत गुरू सत् संग करी
नाम ले भाई नर–नारी
नामेक जरे महीपाले देवालय जायकता।

21
हरिनाम गावा

ऊपर पांठिइं हनु द्वय
हेंठ पांठिइं कौवा गिरवा
देसे बरुन बसे
हरिनामा गावा,
मन आवा रे
सरपंचे पंचनाम लेवा।

उरे ते गरुड़ बसे
पासे ते पेनकोया कंठि देसे
कोकिल बसे हरिनाम गावा
मन आवा रे।

वक्ष–उरे मयूर बसे
हदगे कर जुआ
मस्तिके मैना बसे
हरिनाम गावा, मन आवा रे।

मेदेते अनेक पाखी
बस्तीते गेरवा
मलाशये महीपाल
करे आवा–जावा।
मन आवा रे।

22
हेतु-रुपी नारायण

हामरा गरीब दुखी भूखा
मने-मने बुझी देखा
हेतु रुपी नारायण
हेतु-रुपी नारायण

करे गेले नाना रकम हेहेइक धन
हेतु-रूपी नारायण।

जेंइ जेसन करेइसाहे
तेंइ तेसन पावेइसाहे
हेतु-रूपी नारायण

जेइं नि करेइस
ताकर जीवन अकारन
परेक देखी करे हाय
जेटा रहेइक सेटाव जाइ
परेक निन्दा ना न करा सतऽखन
हेतु-रूपी नारायण।

भागमानेक महानन्द,
अभागियाक कपाल मन्द
मने-मने बुझी देखा दुइयों जन
महीपाल कहे सेंसे
ना न जा भाई घासे-घुसे
हेतु-रूपी नारायण,
गुरू मंत्र जप उरे जाय-जीवन।

23
महामंत्र कहा न रे मानवा

महामंत्र कहा नऽ रे मानवा।
गुरू मंत्र जपा नऽ रे मानवा।

कान फूंकाटा संगेइ चलेइस।
काटी लेतोउ कानवा।।

नाभी देसे हांसी-हांसी
धाय बुढ़िया रहे बसी।
नाभी काटी फेंकी देतोउ
जेसन झाड़ा धानवा।

महामंत्र कहा न रे मानवा।।
कखन किना करे हरि
ना न करा एतेक देरी।
साधु सत्संग करी

सीखा तीन नामवा।
महामंत्र कहा न रे मानवा।।
ससऽगड़ा महीपाले
गुरूमंत्र भूली गेले

आसी वा चौरासी योनि।
घुराई भूले जमवा
महामंत्र कहा न रे मानवा।।

24
बुझी देखा आपन गेयाने

मन बुद्धि अहंकारे
घेरी लेला घारे-घारे।
करे-करे टानी लेगे समने
बुझी देखा आपन गेयाने।।

अनेक कठोर तपे
जनम देला मांय-बापे।
ताके तजी सीता संगे कानने
बुझी देखा आपन गेयाने।।

सत, रज, तम गुने
आना-गना निशि दिने।
शोक, चिन्ता परिश्रम
आहार, निद्रा मैथुने।।
बुझी देखा आपन गेयाने

सोलह नाम बत्तीस आखरे
ध्यान धरे दिगम्बरे।
महीपाले देखा दुइयो नयने
बुझी देखा आपन गेयाने।।

25
संसारे सभ कामे-काजे बाझला

संसारे सभ कामे-काजे बाझला
किना हेहेइक, किना जाहेइक
कोनो निहिं जानला।
शरीर-रूपी संसार भीतर

सताईस टा नक्षत्र गोचर
जन्म अनुसारे,
राशि कर्म करी जातला
संसारे सभ कामे-काजे बाझला।

शरीर-रूपी बनेक भीतर
जे ना जाने गुरू-मंतर
नर-नारी केवे रहोक
कुम्भी पाके फांसला।

संसारे सभ कामे-काजे बाझला।
केऊ तऽ कान फुंकाइ लेला।
केऊ तऽ एसे घुरी गेला
एसे जावा भालो नहेक

महीपाले कहला
संसारे सभ कामे काजे बाझला।

26
हरि नाम भूली गेले

नवमी दशमी मास
माइरी गर्भेते बास
छल करि प्रसव हइले
हरिनाम भूली गेले।

बाल्य-काले करे खेला
माता-पिताक गुचे जाला
युवा काले माता-पिता छाड़िले
हरिनाम भूली गेले।

जेसन हबे वृद्धकाल
बसी बूढ़ा टिपे जाल
निज जाले आपने बाझले
हरि नाम भूली गेले।

निदान समय काले
भने महीपाले
यम आसि धरबे गले
हरि नाम भूली गेले।

27
तरा सुना भाई साधु

भरद्वाज मुनि बोले
देहेर मरम ना जानिले
बटऽ मूले बसिये धेयाय
तरा सुना भाई
साधु कि सहजे पावा जाय?

जे ना जाने धरम करम
से कि जाने साधुक मरम
साधु गन्धे भ्रमरा लोभाय

सत् संग ना करिले
साधु कि सहजे मिले?

नवधा भगति बुझा दाय
साधु गुरू वेद निन्दा
ताथेइ होइछे टाँक चन्दा
महीपाले भाभीछे सदाय
तरा सुना भाई
साधु कि सहजे पावा जाय?

28
खाँटी मन करा

कृष्ण पदे खाँटी करा मन
केनो चिन्हली ना रे पामर मन
खाँटी करा मन।

राधा-कृष्ण युगल मंत्रे
नित करा नाना छंदे
बाजारे-बाजारे जाबी
धरिते ना पारे से मन
खाँटी करा मन।

कृष्ण नाम अमृत निधि
पान कर निरबधी
जे दिन देहे थाकबी जीवन
साधु संगे जाय जेमन
खाँटी करा मन।

हरि नामे महामंत्र सीखा रे गुरूमंत्र
गुरू बिना पर्व बिना हेलाते हेराइ जीवन
निमाई गौर विश्वम्भरा, कृष्ण नामे चेतन करा
चेतने ना चेत मिले, महीपालेक धिक जीवन
खाँटी करा मन।

29

जगतेक उत्पत्ति

ब्रह्म कमंडले बास जगतेक उत्पत्ति
जयऽ जयऽ गंगा, जमुना सरस्वती।
खमक तमक बाध्य बाजे नाना जाति
मधुर मृदंग बाजे, काँपे वसुमति।

काने ते कुण्डल डले, गले गजऽमति
कनक नुपुर टेंगे करे पुस्त पथि।
हंस–हंसिनी संगे करे पिरिति
मेजुरा–मेजुरी संगे नितेइ करे पिरिति।

रितु जड़ित मनि मानिक मोती
फटिक पगे अभरन झलकतऽ ज्योति।
आकासे अलकनन्दा, भुइंए भागीरथी
सागर बंसे उद्धार करे सापे करले मुक्ति।

तोंय मांय एक अनेक तोंय भाग्यवती
ससागड़ा महीपाले करे नेहर विनती।

30

ठाकुर जनम लेला भादरे

ठाकुर जनम लेला भादरे
जनहाइर गादरे,
जानी–सुनी नर भांसे
इ पारे कि उपारे।

देइब योगे जनम लेला
देबकी उदरे।
मथुरांइ देबता सभे,
फूल बेइरसा करे

वासुदेवे लेगी राखल
नन्द जसोदा घारे।
दुइ कड़े तऽ जनहाइर हेतेइक भाई
से किना न कड़ी-कड़ी डाँड़ाटा दुखाई।
कष्ट करले मिष्ट पावबे,
पावबे बुझी देखा अन्तरे
भादर मासे अष्टमी दिने, ठाकुर जनम लेला भाई।
आसिन मासे सप्तमी दिन, ठाकुराइन सामाई,
दसमी दिन विदाई
मांगी लेले गेला शंकरे।
मथुराहिं कंस धंस
लंकाइ रावण बकासुर बध करि कालिया दमन
ससऽगरा महीपाले पुतुना के बध करे
ठाकुर जनम लेला भादरे।

31
हरि नाम कर खेती

खेती कर हरि नाम रे मानवा
हीनऽ ऊँचऽ खेत के जोती के समान कर
ताहिं रपे हरिनाम के रे मानवा
केथि केरा हारा, केथि केरा फारा
केथि केरा पइना, बनाइ के रे मानवा।
मन केरि फारा, तन केरि हारा
ज्ञान केरि पइना, बनाइ के रे मानवा।
एहऽ पारे गंगा, सेहऽ पारे जमुना
माझे तऽ आसन
माड़ाइ के रे मानवा खेती कर हर।
ना लागे धान, ना लागे कवड़ी
ना लागे पइसा, छेदाम के रे मानवा।

तुलसी दासे रघुवर पिपासे
राम नाम के पइना बनाइ के रे मानवा।
महीपाल आसे रहि गेल पियासे
साधु गुरू चरण धवाइ के रे मानवा।

32
हरि बिना बाँचे ना जीवन

के रे बाँचे नारायण निरंजन बिना
जलचर थलचर नभचर नाना।
आदि अन्त हरि देखा रे भाई भालो करि
ताकर बिना बाँचे ना जीवन
लक्ष चौरासी योनि
खाना-पीना दाना-पानी
ता ना हेले हेतेइक नि नाम भजना
कीट पतंग पाखी लख्य-लख्य
ससऽगरा महीपाले भूखे अन्तर दहना।

33
सर्व शास्त्र बीज हरिनाम

सर्व शास्त्र बीज हरि नाम
आढ़ाई आखर भजो रे मन चेतन कर।
महामंत्र कह रे मन चेतन कर
गुरू मंत्र जप रे मन चेतन कर
सोलह नाम बत्तीस आखर भजो रे पामरा नर।
आदि अन्त नाइ तार वेदे अगोचर
साधु सत्संग करि सीखा सभे नर-नारी
महामंत्र ब्रह्म नाम धरले गुचतन आंधार

परम ब्रह्म निरंजन नाम धर
महीपाले दिसाकर, जाकर नाम लेले गुचेइक पाप
नर रे मन चेतन कर।

34
हरि नाम भजो

नाम भजो नाम पिता नाम कर सार
हरि नाम भजो पिता नाम कर सार
जे जनमे जगाई-माधाई हेला पारा-पार।
गुहक चांडालेक संगे करा लेवल रहेन बने
तप्त तेले सुदामा के करलेइन उद्धार।
भक्त बानछा पुरन करि नरसिंह रूप धरी
हिरण्यकशिपु के करलेन बिदार।
मने महीपाले कइ, जाकर कृष्ट मति होय।
एक नाम प्रहलाद हेलाक पारापार।

35
आदि गुरू माता-पिता

अनेक लकेक आंइख फुट लेइन गुरू धरी के
गुरू धरी के भाई भक्ति करी के
भक्ति करि के मुक्ति पावला
मुक्ति पाइ के परापति हेला।
धन्य गुरू भेद देलथिन गटा मुलुके
आदि गुरू माता-पिता
साधु गुरू हर्ता-कर्ता
ज्ञान गुरू संगे जाता, कहत जे लगे

सत गुरू सत्संग करि,
सिखी लेला नर–नारी
शुक्र सनादि सनत कुमार, कहत सब के
महीपाले कहे नीति,
गुरू निन्दा अधम गति
चार लाख चौरासी योनि घुरे नरके।

36
सर्व देव तोंय हरि

अलख निरंजन, दस दिग्पाल
जयऽ हरि जयऽ गोविन्द जयऽ जगत पाल।
तोंय स्वर्ग, तोंय मर्त्य तोंय तऽ पाताल।
तोंय रवि तोंय शशि, तोंय महाकाल।
जयऽ हरि जयऽ गोविन्द जयऽ जगत पाल।
सर्व देव तोंय हरि दिन दयाल
महामांइ महादेव जपे चिरकाल।
जयऽ हरि जयऽ गोविन्द जयऽ जगत पाल।
इन्द्र चन्द्र यम वरूण आदि भूमंडल
परभू निरंजन निराकार आदित्य भूपाल
जय हरि जयऽ गोविन्द जयऽ जगत पाल।
राम गोविन्द हरि आर महीपाल
हरि नाम भजो रे मन, नितर जाबे रसातल।
जयऽ हरि जयऽ गोविन्द जयऽ जगतपाल।

37
माया जालेक डोरी

नारी माया जालेक डोरी
जाइत के बेजाइत करी
नारी हेकत संसऽ जीवन
नारी जे भुवन महान
नारी धरम नष्ट करे
नारी पाठाइ यम घरे
नारी हेत नरक गांजन
नारी लागी लंकापति
लख्य बेटा सवा लाख नाती।
राम करेइ सवंश निधन
पांडव-कौरव सह भरजा विराटे
कीचक पड़े मदन संकटे
भीम करे संहार जीवन।
नारी करे ज्ञान भूल
महीपाल विषये समतुल
नारी तऽ हेत जे नर-नारायण भाई।

38
कनऽ करले नि रहबे हियाँ

कनऽ करले नि रहबे हियाँ
हाड़-मास तर घुनी जातोउ, लागी जातोउ दियाँ।
कंदे जातोउ परिपाटी, लेले जाबथु खाड़रा खाटी
दुलुक-दुलुक लेले जाबथु, उलटाइ देबथु हुआँ।
कादा माखें धुरा माखें कुसुम कस्तरी माखें
कनऽ माखले नि रहबे हियां, तके कहों सैंया
महीपाले कहे सेंसे, इटा तऽ भाई आपन दसे
हाड़ मास चुइल जरी जातोऊ, उड़ी जातोऊ धुआँ।

39
रहस्यवाद

क ख ग घ ड.	करे हुआँ किना पावबे रे।
च छ ज झ ञ	परे हियांइ सभे पावबे रे।
ट ठ ड ढ ण	करे आना-गना भवे रे।
त थ द ध न	परे नजरे चिनहाबे रे।
प फ ब भ म	करे महीपाले भाभे रे।
य र ल व	एक सह छन मते जाबे रे।

40
कलियुग ऐसा युग नहीं भाई

कलियुग ऐसा युग नहीं भाई
जो नर करे विश्वास
जो नर करे विश्वास
हरि हे जो नर करे विश्वास।
मन चंचल, चित ठहर नहीं
नयना बहे उदास हो
शयन, जपन तप, मन उपवास हो
कलियुग ऐसा युग नहीं भाई
चुन्तत चुन्तत सब युग चुन्तत संतों अपने पास हो
सब साधुजन के चरण बन्दौ, कहत तुलसी दास
बानान रस सो ख्याल करो भाई, काशी से कैलास हो
कहत कविराज महीपाल साधु, होइ जा हरि के दास हो
कलियुग ऐसा युग नहीं भाई।

41
माया से भूलना

माया से भूलना
राम नाम भजिले सीता पति रे युग में
माया से भूलना सीता पति अन्त का बेरी
देखियाना अन्ते, कि अन्तत ससंतीरे
युग में माया से भूलना।

जाये का बेरी, देखी पठाअन्ते
कोई नहीं अन्तत संसती रे
युग में माया से भूलना
रामेक माया राम न पाया
सीता राम जानकी युवती रे
युग में माया से भूलना।

रामे का अन्त जाने सुसंत
गुरू बिना मिटे ना दुर्गति रे
युग में माया से भूलना।
एक लेही आना, एक लेही जाना
महीपाल करत प्रणति रे
युग में माया से भूलना।

42
मन के बिगड़े मति जाना

मन को बिगड़े, बिगड़े मति जाना
मन में स्वर्ग, मन में नरक
मन में वचन, सर्व में दुनयाना
मन के बिगड़े मति जाना।
मन में गंगा, मन में जमुना
तांहि बसि मंत्र पात्रे करहि सिनाना
मन को बिगड़े मति जाना।

मन में हर्ता, मन में कर्ता
मने-मने मनस्तापे सोचहिं मरना
मन के बिगड़े मति जाना।

मन में मारे, मन में तारे
मन-मने मंदोदंरी करतंहि ध्याना
मन को बिगड़े मति जाना।

मन में आना, मन में जाना
मने-मने महीपाल राम गुण गाना
मन को बिगड़े मति जाना।

43
चास करा रीतिमत

चास करा रीतिमत करी जन्तु अनुसारे
रे भाई उठा बूंटा धरी
चास करा रीतिमत करी।

हारे कारहांइ करा सेइर
ताकर ऊपरे देहाक मेइर
तरा चास करा रीतिमत करी।

हे-रे हे-रे दे-दे बाबा भागा धापिच करी
अनादि अनन्त हरि, देखा रे भाई भालो करी
तरा चास करा रीतिमत करी।

नाना रकम आबाद करा, देखा घुरी-फेरी।
माघ ले भाई करा सुरू
जे दिन हामराक आखाइन-बुरु
चास करा रीतिमत करी।

इ संसारे महीपाले
सीखा गुरूधरी
चास करा रीतिमत करी।

44

इ आकाले

भावे भरली पेट
पड़ी गेला आसाड़
अहो रे, जेठे बुना
इ आकाले।

तरा केऊ नाहीं जाना
पेट भरल किना
सावन भादो मासे
चास करली बेसे।
इ आकाले।

अहो रे आसिन देखा पानीक सूना
तखन पूस मासे
छंथा–पुदगा हेली बेसे
नइहरे माघ फागुन
लागल भाभना
इ आकाले।

चैत बैसाख मास
रंग नि कर देखी आस
अहो रे, महीपालेक छूटल भाभना
इ आकाले पेट भरब किना।

45

रउद देखी उड़लऽ परान

इ भव–संसारे,
रही गेलों मोंय कारागारे
हाय, रउद देखी,
उड़ल परान जे।

भरल पेटे आहि घाव,
किना कही देबन भाई
हाय परान,
इ सालोऊ मरी गेली धान जे।

आवल रहों आशा करी
सेइ आशा तऽ लेला हरि
हाय परान,
रही गेली मन पसतान जे।

बूंद सेंवाती बिनु
जेसन चातकी तनु
हाय परान,
तइसन कलपे किसान जे।

दुई हजार बाइस साले
देखलाक जे महीपाले
हाय परान,
जइ टाका तइ केजी धान जे।

46

तोंय किना लेखे बाँचबे

तोंय किना लेखे बांचबे? मन झाड़ा आकाले
धान-धुर सभ मरि गेलेइक, स्वर्ग, मर्त्य पाताले।
झाड़ा आकाले।

एकटा पानीक दुखे देखा मरि गेलेक धान
ताकर पेछुइं रंग घोंघी करल पयान।
काकरो हेलेइक, काकरो गेलेइक, जाकर जेसन कपाले
रे भाई झाड़ा आकाले।

भूख मरी आकाले देखा ढांपी लेलेक भाई
संसारे सब कटकिना भाई, बेलेक बेचाई
आर किना टानाटानी बिहार आर बंगाले
रे भाई झाड़ा आकाले।

सबले बेसी बेइरसाटाइं, मारेसाहे भाई
से बेथा कि धनीइं जानत, जानियो गरीबरांई
जौ, जन्हाइर, बाजड़ा गहम हटात जदि बुनी सिराले
मने-मने बुझी देखे, सुने नऽ रे भाई
दिन दुनियाइं उलटी गेलेइक करबे कन उपाय।
ससऽगड़ा महीपालेक, भरी गेला कांगाले
रे भाई झाड़ा आकाले।
तोंय किना लेखे बांचबे मन झाड़ा आकाले।

47

नि करले खाबे घारेक पीठा

करें रे मन चेठाटा तोंय, करें रे मन चेठाटा,
नि करले तऽ खाबे घारेक पीठाटा
हांथे गड़े करें काम, मुहंटाइं कहें हरिनाम
करें रे मन चेठाटा, चेठा करी धरें हारेक बूंटाटा
करें रे मन चेठाटा, नि करले तऽ खाबे घारेक पीठाटा।
डेढ़ फुटेक मानुसटा, ग्यारह गजेक पटाटा
करें रे मन चेठाटा, किनाई भरोव बुझी देखे भठिटा
नकरे-चाकरे हियां, भरि गेला जाहां-ताहां
करें रे मन चेठाटा, अकारने बांधल आहिस फेटाटा।
चेठा चैतन्य करि, गुरूमंत्र उरे धरि
करे रे मन चेठाटा, गुरूमंत्र सीखे नितऽ धेपटा।
काहाँ जाहिस ताड़ा-ताड़ी, संगेइ आहोव ठाकुर बाड़ी
करें मन चेठाटा, कने सिखा देलोव चूनेक टीकाटा।
मुखे चराय नरी-नरी, खुदा चराय एके बेरी
करें रे मन चेठाटा, देखिस नितऽ जाबे जमेक खूंटाटा
भूखे जीवा छांइं-छांइं, महीपालेक दिशा नाइ
करें रे मन चेठाटा, टाका केजी खाहिस पचल आटाटा
करें रे मन चेठाटा।

48
डुबी गेला पाटलीपुत्र

आगुइं-आगुइं भगीरथ ताकर पेछुइं गंगा
डुबी गेला देखा पाटलीपुत्र पाटना।
घार दुवाइर दलान कोठा, नाना रकम डिसना
डुबी गेला देखा पाटलीपुत्र पाटना।
देव-देवी गेला डुबी आर कतेक कारखाना।
डुबी गेला देखा पाटलीपुत्र पाटना।
आरो जतेक पशु-पक्षी, कने करेइ गनना
डुबी गेला देखा पाटलीपुत्र पाटना।
दुई हजार बतीस साले, महाकष्ट महीपाले
डुबी गेला देखा पाटलीपुत्र पाटना।

49
पानी

पानी-पानी करि जाब आकाशे धावला
देखा पानीटा के दूधेक संगे संसारे बेची गुचावला।
अन-जीवन प्राण-पानी, आय व्यय गेला
देखा पानीटा के संसारे बेची गुचावला।
दूध पानीक विचार करत सेटाउ नि करला
देखा, पानीटा के दूधेक संगे बेची गुचावला।
पानीक जालांइ महीपाले, अनेक खति हेला
देखा पानीटा के संसारे बेची गुचावला।

50
डुबी रहा चासे

ना न जा भाई घासे–घुसे
जावत जीवन डुबी रहा चासे
ना न जा भाई घासे घुसे।

भूगोल देखा, देखा इतिहासे
फसल करा बारह मासे।
ना न जा भाई घासे घुसे।

जीव मरेक आपन दसे
किना करत बेगर चासे
ना न जा भाई घासे–घुसे

अनेक जालांइ मरबे उपासे।
चास तऽ भाई हेकेइक बेसे
मरि जाहेइक पानीक दसे
ना न जा भाई घासे–घुसे

पानीक उपाय करा देसे–देसे।
महीपाल कहे सेंसे
कने आहे बेगर चासे
ना न जा भाई घासे घुसे

गोविन्द सारथि हारेक पासे
ना न जा भाई घासे–घुसे।

51
धुँध बासात पानी

देखा रे भाई धुंध बासात पानी
संसारे कतेक हेलेइक हानि।
भाई, धुंध बासात पानी।

किना कही देबन दादा
झंकरी के घार हेली कादा।
चौदह आश्विन गुरूवारे
दिवा निशी अन्धकारे।
धुंध बासात पानी।

जंदे-जंदे गेला हरि
गाछ-पात कुटपाट करि।
धुंध बासात पानी।

हरिक नीला बुझा भार
कम्पनी के छिंटल तार।
दो हजार सोलह साले
देखलाक जे महीपाले।
धुंध बासात पानी

संसारे कतेक हेलेइक हानि।

52

केऊ ना रे भाई

केऊ ना रे भाई,
काहुँ केऊ ना रे भाई,
रंग कमल मन
धरा सभेकाई।

स्वर्ग, मर्त्य पाताल पुरे
देखल गटाटाई
बिना सुरूजे आंधार घारे
टमड़ले ना पाय।
जइ दिन देहे रहे प्राण
तइ दिन सभकाई।

आंइख नुबले दिनेइ आंधार
नुबी देखा भाई।
काहुं केउ नाई रे भाई

नींद सपने बाघे खाय
कहत सभे काई।
जीवेक दिन स्वप्न
राइत स्वप्न हेरेइत के जाई
काहुँ केऊ रे भाई।

सरकस सिनेमा ठकी देखे दुनियाई।
भेल-भेलकी भोज बाजी जीवन गो जाई।
छौ नाच नाचावे विधिराम गोंसांई
मरकट नाचे नर मरकट की नाई।
काहुँ केऊ नाई रे भाई।

पंच तत्त्व पंचनामा, सीखा सभेकाई
ससऽगड़ा महीपाल कहत धेयाई
काहुँ केऊ नाई रे भाई।

53
बाँचल आहियो दुखे-सुखे

बाँचल आहियो दुखे-सुखे
गोड़ लागी सब काके
चास करा रीतिमत करी
रितु अनुसारे रे भाई, उठा बूंटा धरी
चास करा रीतिमत करी।

हारे कारहांइ करा सेइर
ताकर उपर देहाक मेइर
ह रे ही रे दे दे बाबा ठापाछि करी
चास कर रीतिमत करी।

अनादि अनन्त हरि
देखा रे भाई घुरी-फेरी
नाना रकम आबाद करा, देखा घुरी-फेरी
चास करा रीतिमत करी।
माघ ले भाई करा शुरू
जे दिन हामराक आखाइन शुरू
ससऽगड़ा महीपाल, सीखा गुरू धरी
चास करा रीतिमत करी।

54

सुना रे भाई हिन्दू मुसलमान

सुना रे भाई हिन्दू मुसलमान
ई संसारे महापापी हेवा सपूतमान
चाइर धारे, चाइर बाटे
मइधे आहेक मदेक भाठी
सुना रे भाई हिन्दू मुसलमान।
मुसलमान ई संसारे आनागना
जेसन सुकुर गान
सत्य त्रेता द्वापर कलि
पहंचला महाकाली
सुना भाई हिन्दू मुसलमान।

दुइधारे दुखान
बांधी रजे बनी दान।
कलिते कलंख सुने पहुंचला रघुमनी
सुना रे भाई हिन्दू मुसलमान।
धूमकेतु नेजे बांधी छूटल हनुमान
निज धर्म परे हरि
महीपाल कर जरि
सुना भाई हिन्दू मुसलमान।

रजे बूंदा बरिसये, रजे बहे बान
सुना रे भाई हिन्दू मुसलमान।

55

दुइ दिन लागी ना न लागी मरा

दुई दिन लागी ना न लागी मरा
साधु सत्संग करि गुरू-मंत्र धरा
स्त्री पुरुष टाना, नित गजगज भालो नेहेइक सन्निपातेक डेरा।
प्रेम पिरिती विषय रीति,
गुरू बिना अधोगति
रे भाई, मने-मने बुझी देखा
दुइयो प्राणी तरा।
चिन्ता छाड़ी धन्धा करा, ना न डभाइं डुबी मरा रे,
तिरि-पुरूषे टाना टानी
दिने राइते एकधांग हेलोऊ, हरि नाम करा।
मिछाई जनम इ जिनगानी
नित गजगज भालो नहेइक
सन्निपातेक डेरा
चिन्ता छाड़ी धांधा करा
ना न डभांइ डुबी मरा।
दिने राइते एक धांव
हेलोउ हरि नाम करा।
आवल आहिया आशा करि
ना न जा भाई सुधाई घुरी
भाई रे ससऽगड़ा महीपाले
महामंत्र धरा
दुइ दिन लागिन ना न लागी मरा।

56
गन्डगले दिन गेली

केवल मुंहेक खाला-खाली
गन्डगले दिन गेली
निरानन्दे ना रहा भाई
आनन्द करा सभे काई।

दुई काने दुई आना
बाकी आहोन चौदह आना
सोलह आना जमा करा भाई
आनन्द करा सभे काई।

सोलह नामे सोलह कला
सीखा रे भाई दुइयों बेला
सोलह नामे समन कराई
आनन्द करा सभे कोई।

महीपाले देखा-सुना
आंइख रहेइत ना हे काना
महामंत्र सीखा नऽ रे भाई
ओ भाई गुरूमंत्र सीखा सभेकाई
आनन्द करा सभेकाई।

57
सुनो रे सखि

सुनो रे सखि बलि रे तोरे
पिरित करिहोना बलि बारे-बारे

एई पिरित जाल थाके चिरकाल
मने हले हृदे वेदना
धिक धिक स्याम तर प्रेमेर छलना।

दिवा निशि भावना अन्तरे
एई दुःख आर बलिबो काहारे?

कि हलो हाल हइये बेहाल
जले गेलो नव यौवना
छिक-छिक स्याम तर प्रेमेर छलना।

यदि ना करिबे दया आमारे
झांप दिबो आमी सरोवरे

बांसीर शाल महीपालेर जाल
एबे कि प्राण बांचेना
धिक-धिक स्याम तर प्रेमेर छलना।

58
काहे करले आगमता

काहे करले आगमता
रे नदी सूता
काहे करले आगमता

सौ लगेक पासे बसी
आनले जे सिंदूर घंसी
बिना ताके धरावले नाता
रे नदी सूता।

बसल रहों डाला भरी
बाहरावले हाथे धरी
बिना ताके धरावले नाता
रे नदी सूता।

माटी-काटी पाखन छेंछी
बाली काटाक संग बाली बही
कखनो ना रही मुंड़े सिंथा
रे नदी-सूता।

ससऽगड़ा महीपाले, कहे आचंभिता
रे नदी सूता।

59
सतरेक पूत विनाश नि

सतरेक पूत विनाश नि हेइक कहत
जाकर जेसन जहत आहेइक
ताकर तेसन महत।

नाक काटाई के ना हे सतर
कान काटाई के काने सतर भाई रे
मछ काटाई के मछे सतर
संत लगे कहत।

तीन कुड़ी आर दसे सत्तर
देखा रे भाई एहे मतर भाई रे
शुक्र हरासे वायु नासे
महीपाले कहत
जाकर जेसन महत।

60
मने-मने बुझी देखा

देखा नउआ डाकी के, मच दाढ़ीटा देलेइक कामाइ
मचदाढ़ी जे किना हेकेइक, केसे जाने पारत भाई।
सभ देलेइक कामाई समाधि सनत कुमार नयधी सकानने
द्वादश बछर यज्ञ करे एक मने

लोमहू सनेक पुत्र जन्म लेला तबे कामाई
विप्र, खत्री, वैश्य, शूद्र चारी जाति भाई
खाप काटी के तुतका देलथिक चिकनाई
गरधखनी मानुसगुला दखल करा हेली दाई

ठक करा, ठाठाकरा भालऽ नहेइक भाई
एहे ठग करी के मथुरा उजड़ कहत सभेकाई
छप्पन कोटि यदुवंश ध्वंश हेला सभेकाई
दाढ़ी राजा, दाढ़ी पूजा, दाढ़ी बामन बनिया

एक दाढ़ी मुख स्वरूप अलग पुरुष पहचानिया
देखा-देखी रम राखले इसा डूबे खाना पाई
देवऋषि ब्रह्मऋषि, राजऋषि भाई
जतेक मुनि ऋषिइं कहत सभे काई
मरद हेइके मच नि राखले, माखन चांपा कहात भाई
मने-मने बुझी देखा, सुना नऽ रे भाई
उचित काथा ना सुनी के समनालये जाई
मने-गुमाने महीपाले, आपने बुझी देखा भाई
नउआ डाकी के मच-दाढ़ीटा देलेक कामाई।

61
तरा देखा रे भाई

देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई
चुंदीकाटी तुतका बाटे देलथिक चिकनाई
देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई।
विप्र, क्षत्री, वैश्य शूद्र त्याग करला
ब्रह्म सूत्र रे भाई
माला टूटाइ, पइता छिंटाइ फेंकला सभेकाई
तरा देखा रे भाई।
हिन्दू हेइके मुसला घेंचाइं
सभ खोवला एकांइ-एकाइं रे भाई
मछ काटी के माखन चापाइ घेरला दुनियाइं
भेष-भूषा परिपाटी, मान-मर्यादा गेलेइक उठी
भाई रे, एहे रकम जुगे-जुगे जिनगानीटा बिताई
तरा देखा रे भाई।
आवला गेला खाला-पीला, नाना रकम करला भाई
मौज करी के महीपाले भूत लेखे बुझाइ
तरा देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई।

62
सर्विसे संसार घेरी लेल

सर्विसे संसार घेरी लेल,
देखा नावा रेल आवी गेल
सर्विसे संसार घेरी लेल

चन्द्रपुरांइ हेलेइक शुरू,
राउरकेला गेलेइक थ्रू
जाकर जेसन जमी जाताइं गेल,
देखा नावा रेल आवी गेल

हीनऽ ऊँचों सम करी,
ताकर ऊपर लाइन धरी
नदी नालाइं कुल बांधी देल,
देखा नावा रेल आवी गेल।

गगने-भुवने तारे खभर,
राखे टिकिट घारे
बाबू भइया घासे घुसे गेल,
देखा नावा रेल आवी गेल

काहाँ जाइहा ताड़ा-ताड़ी
पहँचला डिजेल गाड़ी
महीपाले देखी-सुनी लेल,
देखा नावा रेल आवी गेल
सर्विसे संसार घेरी लेल।

63
विधि दुख देल

गजगजे मर जीवेक पानी हेल
विधि दुख दे नऽ, सुख दे नऽ
गजगजे मर जीवेक पानी हेल।

आवल रहों आशा करि
से आशा तऽ लेला हरि
एकांइ-एकांइ सभे घुरी गेल
विधि दुख देल।

नाना रकम खाना-पानी
नाना रकम परिधाना
नाना रकम देखी सुनी लेल
विधि दुख देल।

ढांसा मसा मुसाक डरे
बसल आहो आंधार घारे
फनी राजा चरे लूटी लेल
विधि दुख देला।

सात सर्वना सुनी
महीपाले मने गुनी
आस लागी मारि माटी हेल
गजगजे मर जीवेक पानी हेल।
विधि दुख देल।

64
घंटा बाजेइकला

बारो पाँचे साठ मिनिटे घन्टा बाजेइकला
दिन राइत चौबीस घन्टांइ सेकेन कांटा घुरेइकला
घन्टा बाजेइकला।

मने-मने बुझी देखे, सुन न रे भाई
कन घड़ी के किना हेहेक देश-दुनियांई
एकटा घड़ीइ तीनटी कांटा, आपन गतिइं घुरतला
घन्टा बाजेइकला।

सबले उपरे घुरेसाही, सेकेन कांटाटी
सबले हेंठे घुरेसाही घन्टा कांटाटी

माझे-माझे मिनिट कांटा पाइ पलके घुरेइकला
घन्टा बाजेइकला।

तीनटी कांटा त्रिजगामी खूंटाल आहात भाई
चाभी देवे नि जानले अचल रही जाई
रोज एकबार चाभी देवाक तबेगानी चलतला
घन्टा बाजेइकला।

साठ सेकेने एक मिनट चली जाहेइक भाई
साठ मिनिटे एक घंटा बाजले जाहेइक भाई
महाभाग्य महीपाले आंइख दुइयोटा देखेकला
घंटा बाजेइकला।

65
विजया दशमी

विजया दशमी सेवा कर, रे पामरा नर
विजया दशमी सेवा कर।
मनसा मस्तके बन्दी , सरस्वती गले बांधी
शिव-शंकर बांधी आछे तोर, रे पामरा नर।

सात समुन्दर जले, जनम लेले पद्म फूले
रस चूसे बनेर भ्रमरा रे, पामर नर।
अगम सिन्धुर जले, भांसे आछे महीपाले
उमापदे श्री हरि शंकरे, रे पामरा नर।
विजया दशमी सेवा कर।

66
पढ़ते जाबो दुइ बेला

चलो पढ़ते जाबो दुइ बेला
संदीप मुनीर पाठशाला

आगे जायें गुरू-भक्ति
तार परे हइ बइ खुला
संदीप मुनीर पाठशाला।

कृष्ण बलराम जाइछे
आरो कतो जाइ छेइला
संदीप मुनीर पाठशाला।

सिदाम, सुदाम, साब सुदाम
आरो कतो दूध बाला
संदीप मुनीर पाठशाला।

सनिवारे सरस्वती, सेवा करबो सब छेइला
विद्या हले बुद्धि बाढ़े
गुचबे भवेर भोग जाला
संदीप मुनीर पाठशाला

चलो पढ़इते जाबो दुइ बेला।
लेख पढ़िये मन राखीयें
छुटी सेंसे बॉल खेला
संदीप मुनीर पाठशाला

ससऽगड़ा महीपाल,
गुचबे भवेर भोग--जाला
चलो पढ़इते जाबो दुइ बेला।

67

मिछाई जनम इ जिनगानी

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
सतगुरू सत्संग करी, महामंत्र धरा
प्रेम पिरीती विषम रीति, गुरू बिना अधोगति, भाई रे
मने-मने बुझी देखा दुयो प्राणी तरा, दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।

तिरि-पुरुषे टाना-टानी
मिछाई जनम इ जिनगानी भाई रे
नित गजगज भालो नहेइक
सन्निपातेक डेरा।

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
प्रेम-पिरिती बिसुम रीति
गुरू बिना अधोगति भाई रे
मने-मने बुझी देखा दुइयो प्राणी तरा।

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
चिन्ता छाड़ी धांधा करा।
ना न डभाइं डुबी मरा रे भाई
राइते दिने एको धांग हेलोऊ हरिनाम करा

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
आवल रहिया आशा करी
ना न जा सुधाई घुरी
ससऽगड़ा महीपाले महामंत्र धरा
दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।

68
आनन्द करा सभेकाई

खाली मुँहेक खाला-खाली,
गन्डगले दिन गेली।
आनन्द करा सभेकाई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

दुई काने दुई आना
बाकी आहोन चौदह आना।
सोलह आना जमा करा भाई
आनन्द करा सभेकाई।।

सोलह आना, सोलह कला,
सीखा रे भाई दुई बेला।
सोलह नामे समन पाराई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

महीपाले देखा-सुना
आंइख रहते ना हे काना।
महामंत्र कहा न रे भाई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

69

जाहोऊ गनल दिन

मन रे तर पले-पले, जाहोऊ गनल दिनटा।
कन कामे तोंय भेदाल अहिस, बुझी देखे मनटा।
नर गज बिसासय, आयु कहत भाई
एक सौ आर एक, मृत्यु पेछुइं-पेंछुइं जाय।
आगु बाटे हाफाड़ी के, डांड़ाल आहोउ सिंहटा।
पाइ पल के खबर नि भाई, काइल के करे आशा
कखन किना करे हरि, बहे दुई नाशा।
निमिषे-निमिषे चले, बाजे चौबीस घंटा
कर्म करि करम राजांइ, किना देलोऊ भाई
चील सियारेक काथा सुनी, रहले भुलाई
मर्म जानी धर्मशालांइ, सीखे हरिक नामटा।
हिन्दू हेइके मुसला घेंचाइ काहां जाहीस भाई
राहुक रकम सुदर्शने, काटतोउ घेंचाटांई
महीपाले मने करि फुंकाइ लेन कानटा।
मन रे तर पले-पले, जाहोउ गनल दिनटा।

70

बिना अरे सुनता, बिना अरे देखता

बिना अरे सुनता, बिना अरे देखता
बिना अरे आनागना हो संगीरा
बिना अरे सुनता भाई, बिना अरे देखता।

बिना अरे खाता भाई, बिना अरे खाना-पीना हो संगीरा
बिना अरे खाता भाई, बिना अरे ताकता।
बिना अरे हाँसी उठेइ हो संगीरा
बिना अरे चिन्ता भाई, बिना अरे कांदता
बिना अरे हांसी उठे हो संगीरा, बिना अरे चिन्ता भाई बिना अरे कांदता
बिना अरे झुमता भाई, बिना अरे जागता।
बिना अरे बोली चाली हो संगीरा
बिना अरे हर्ता भाई, बिना अरे कर्ता।
बिना अरे महीपाले हो संगीरा
काने फूंकाइ लेता, भाई छुछाइ घुरी जाता।

71

आँइख फुटले देखबे धनटा

आँइख दुइटा फुटले जानी देखबे हामर धनटा
जिउ भइर खाय के जिनगानीटा काटीसला तोंय दिनटा।
भगवान के भक्ति करी, डाकी आने भाई
जाहाँ जेसन भग जमाइं ताहाँ तेसन खाई।
तोंय सेटा जानबे केसे बिसरिया तर मनटा।
सपने नित देखले आहिस हामर घार भाई
विपने काहाँ देखे पावबे लक के पेतियाई
तर काथाइं भुलालोऊ तर मन टा
निधनियांइ धन देखे, दिनेइ देखे तारा
धनीमाने धन हारावले दिनेइ दिसा हारा।
ससऽगरा महीपाले कहे कने गनेइ धनटा।

72

काहूँ केव नाइ रे भाई

काहूँ केव नाइ रे भाई
गुरू मंत्र ब्रह्म ज्ञान धरा सभेकाई।
जइ दिन हिंदे जीवन रहेइक, तइ दिन सभकाई
आँइख मुंदले दिनेइ आँधार, नुबी देखा भाई।
स्वर्ग-मर्त्य पाताल पुरे देखलों गटाटाई
बिना सुरूजे आँधार घारे टमड़ले ना पावाई।
नित सपने बाघे खाय, कहत सभेकाई
इ जीवन दिन राइत सबन हेइत के जाई।
पंच तत्व पंचनाम सीखा सभेकाई
ससऽगड़ा महीपाल कहत धेयाई।

73

भूत बाँधा मंतर

भाई, देखिहा नित भूते भेदाइ राखतन
भूत-बांधा मंत्र सीखा, तबे भूते छाड़तन।
भूत बांधा, भूतानी बांधा बत्तीस कोटि डाइन बांधों
डाइन बांधों, जुगिन बांधों
बत्तीस कोटि भूत बांधों, तबे करों किरतन।
डाइन बांधों, जुगीन बांधों, मड़ा मासान बांधों
गाढ़ा बांधों, ढड़हा बांधों आर बांधों सनतन।
नदी साले देखा सुना, पांच बहनि, सात बहनि आना-गना
गुरू मंतर सिखी ले नि तऽ धरि-धरि खातन।
भूत भभिसत, वर्तमाने, सुने काने
दस भूते दसाक दसाइं टानी लेले जातोन।

74
सन्निपातेक खेइल

देखा संसारे सन्निपातेक खेल
गल–गड़े नली फूली गेल
आगु हेलेइक सरद खखि
ताकर पेछुइ ऊपर धँकी
आर घड़–घड़ी संगेइ उठी गेल।

वात विकारे टाना–टानी
छाड़ी देलेइक आहार पानी
कफ सेलसांइ नाड़ी भांसी गेल।
निमछा छेरी झाड़ा–फूंका
कतेक रकम अझा–सखा
चाइरो धार चाउर छिंटी देल
गल गड़े नली फूली गेल

कतेक रकम दवाई पानी
नि सुनला रघुमनी
आर महीपालेक रही गेला सेल
गल गड़े नली फूली गेल।

75
दवाई–पानी नि सुनलेइक

देखलो मोंय भइर नयने
दवाई पानी नि सुनलेइक मरने
कतेक रकम अझा–सखा
कतेक रकम झाड़ा–फूंका
कतेक रकम सुई मारद बइद सियाने।

रग बेयाधि ग्रह फाँड़ा
काटी–कुटी नौ खाँड़ा
आर कतेक रकम हुम करत

बाभन, सखा अझा देवनाइ
उनीस घारे सभेकाई
बीसेक घारे केऊ नाई।

एकुइस घारे टानी आने मारे समने
मने करि गउद चांदे
महीपाल रोजे कांदे
देखा भाई, दाना सिराइ गेला तनु उजाने।

76
धनी हामर जीवन

हे धनी कहों तके,
ना नऽ छाड़ी राखे मके
हे धनी तोंय धनी
जीवन हामर जे।

लेइए देबों साया-साड़ी
आरो देबों सांखा-चुड़ी
हें धनी मके छाड़ी
ना जाबे नइहर जे।

नइहर गेले सबहुँ के पाले
हें धनी कनऽ ठीन ना मिले डहर जे।
जे दिन हामरा छाड़ा-छाड़ी
से दिन हेब राँड़ा-राँड़ी
हे धनी तोंय घनी जीवन संगिनी रे।

परम पुरूष जारा,
जेनिक मरम जानत तारा
हे धनी महीपाले, करत नेहर जे।

77
संइयाक ढेंकी

संइयाक ढेंकिया रे, ओ तर सांबांइ कुटे धान
कुंद-कांड़ीटांइ गिरे ठान-ठान
ढेंकीटा कहे रे भाई, मोंय मातुवाल हाथी
अष्ट अंग रहेइत के, मके दुबिइं मारे लाथी।
खूंटाटा कहे रे भाई, हामरा दुइ भाई
ढेंकीटा धान कुटे, हामरा गीत गाई
आड़ सुलिटा कहे रे भाई मोंय दुइ बिता काठ
मोंय ना रहले ढेंकी चितपाताने फांक।
घुसराटा कहे रे भाई, हामर लोहाक बांधल मुंह
हामर जूंठा सभ खात हामर चांदेक रकम मुंह
कांड़ीटा कहे रे भाई मर एक बिता गाढ़ा
मर भीतरे जेटाइ देबे, सेटाइ करो गुंड़ा।
आंटी टी कहे रे भाई मर कमर बांधा दड़ी
ढेंकीटांइ धान कूटे मोंय जड़ऽ करी
सूपटांइ कहे रे भाई मोंय कुलाइ-कुलाइ खाऊँ
हामर खावा परेइ महीपाले खाय।

78
कलियुग भेला भारी

सास के पतोहू देहेइक गारी
ससुर के पतोहू देहेइक गारी
कलियुग भेला भारी
बापे जदि कहेइक आंटे
बेटा छुटलेइक दउड़ि काटे।

बापे बेटाइं टाना-टानी
इटा हेकेइक भिनाइएक ठेन-ठानी
महीपाल कहे हारी,
गुरू बिना केसे तरी।

79
जति के आवलों हार

जति के आवलो हार
राखी देलेइं पइना फार
मके देखी, ढांपी-तपी सुतली
काहे एतेक सियान सिखली।
खजी न पावों घटी-बाटी
कहें नऽ गे लाठेक बेटी
पाछे न कि डाड़ी घाटे छाड़ली।
उठे नऽ गे जादुमनी
दे नऽ एक घटी पानी,
सुनी के बूढ़ी भालू लेखे कुंहरली
खुखुड़-मुखुड़ उठली
नेइहर बाटे चलली
एके बारे एबार महीपाल चेतली।

80
खाटे गेला नदी धार

खाटे गेला नदी धार
आना-गना करे बहुबार
रजे-रजे काटे माटी
खाली करे मुंहेक चाटी
गेला नदी धार

दे दे बाबा ठां-ठां करी
घुरे सात बार।

उलुक पेचा, दुंदू जारा
अन्धकारे देखत तारा
सारा निशि महानंदे
दिवा से अन्धकार।

महीपाल करे धरे
वाते-पिते कफे मरे
खाटे गेला नदी धार

उबुक-डुबुक नदिया
केसे हेब पार?

81
कलियुगेक जेनी

देखा रे भाई कलि युगेक जेनी
कखनो ना आदर करी, देथिन घटी पानी।

कंदउले तोंय आवले जदि,
पूछे लागतोऊ खदि नदि
कनऽ मते टक देले हेतेइन तरफसानि।

आगुए खाली ताड़ाताड़ी
पुरूष रहलेइक हा फाड़ी
ढड़हा भरी मलक मारी गेली चाटानी।

खांचिइं आहि गोबर भरल
बसे खाबे देबों जरल।
खाय उठी जूंठा हांथे, डुबाई लेत पानी।

महीपाले कहे नीति
पुरूष निन्दा अधोगति
निदान काले एसन गिलि के, यमे लेगतेन टानीं।

कि हलो हाल हइये बेहाल
जले गेलो नव यौवना
छिक-छिक स्याम तर प्रेमेर छलना।

यदि ना करिबे दया आमारे
झांप दिबो आमी सरोवरे

बांसीर शाल महीपालेर जाल
एबे कि प्राण बांचेना
धिक-धिक स्याम तर प्रेमेर छलना।

58
काहे करले आगमता

काहे करले आगमता
रे नदी सूता
काहे करले आगमता

सौ लगेक पासे बसी
आनले जे सिंदूर घंसी
बिना ताके धरावले नाता
रे नदी सूता।

बसल रहों डाला भरी
बाहरावले हाथे धरी
बिना ताके धरावले नाता
रे नदी सूता।

माटी-काटी पाखन छेंछी
बाली काटाक संग बाली बही
कखनो ना रही मुंड़े सिंथा
रे नदी-सूता।

ससऽगड़ा महीपाले, कहे आचंभिता
रे नदी सूता।

59

सतरेक पूत विनाश नि

सतरेक पूत विनाश नि हेइक कहत
जाकर जेसन जहत आहेइक
ताकर तेसन महत।

नाक काटाई के ना हे सतर
कान काटाई के काने सतर भाई रे
मछ काटाई के मछे सतर
संत लगे कहत।

तीन कुड़ी आर दसे सत्तर
देखा रे भाई एहे मतर भाई रे
शुक्र हरासे वायु नासे
महीपाले कहत
जाकर जेसन महत।

60

मने-मने बुझी देखा

देखा नउआ डाकी के, मच दाढ़ीटा देलेइक कामाइ
मचदाढ़ी जे किना हेकेइक, केसे जाने पारत भाई।
सभ देलेइक कामाई समाधि सनत कुमार नयधी सकानने
द्वादश बछर यज्ञ करे एक मने

लोमहू सनेक पुत्र जन्म लेला तबे कामाई
विप्र, खत्री, वैश्य, शूद्र चारी जाति भाई
खाप काटी के तुतका देलथिक चिकनाई
गरधखनी मानुसगुला दखल करा हेली दाई

ठक करा, ठाठाकरा भालऽ नहेइक भाई
एहे ठग करी के मथुरा उजड़ कहत सभेकाई
छप्पन कोटि यदुवंश ध्वंश हेला सभेकाई
दाढ़ी राजा, दाढ़ी पूजा, दाढ़ी बामन बनिया

एक दाढ़ी मुख स्वरूप अलग पुरुष पहचानिया
देखा-देखी रम राखले इसा डूबे खाना पाई
देवऋषि ब्रह्मऋषि, राजऋषि भाई
जतेक मुनि ऋषिइं कहत सभे काई
मरद हेइके मच नि राखले, माखन चांपा कहात भाई
मने-मने बुझी देखा, सुना नऽ रे भाई
उचित काथा ना सुनी के समनालये जाई
मने-गुमाने महीपाले, आपने बुझी देखा भाई
नउआ डाकी के मच-दाढ़ीटा देलेक कामाई।

61
तरा देखा रे भाई

देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई
चुंदीकाटी तुतका बाटे देलथिक चिकनाई
देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई।
विप्र, क्षत्री, वैश्य शूद्र त्याग करला
ब्रह्म सूत्र रे भाई
माला टूटाइ, पइता छिंटाइ फेंकला सभेकाई
तरा देखा रे भाई।
हिन्दू हेइके मुसला घेंचाइं
सभ खोवला एकांइ-एकाइं रे भाई
मछ काटी के माखन चापाइ घेरला दुनियाइं
भेष-भूषा परिपाटी, मान-मर्यादा गेलेइक उठी
भाई रे, एहे रकम जुगे-जुगे जिनगानीटा बिताई
तरा देखा रे भाई।
आवला गेला खाला-पीला, नाना रकम करला भाई
मौज करी के महीपाले भूत लेखे बुझाइ
तरा देखा रे भाई एक वर्ण हेला सभेकाई।

62
सर्विसे संसार घेरी लेल

सर्विसे संसार घेरी लेल,
देखा नावा रेल आवी गेल
सर्विसे संसार घेरी लेल

चन्द्रपुरांइ हेलेइक शुरू,
राउरकेला गेलेइक थ्रू
जाकर जेसन जमी जाताइं गेल,
देखा नावा रेल आवी गेल

हीनऽ ऊँचों सम करी,
ताकर ऊपर लाइन धरी
नदी नालाइं कुल बांधी देल,
देखा नावा रेल आवी गेल।

गगने-भुवने तारे खभर,
राखे टिकिट घारे
बाबू भइया घासे घुसे गेल,
देखा नावा रेल आवी गेल

काहाँ जाइहा ताड़ा-ताड़ी
पहँचला डिजेल गाड़ी
महीपाले देखी-सुनी लेल,
देखा नावा रेल आवी गेल
सर्विसे संसार घेरी लेल।

63
विधि दुख देल

गजगजे मर जीवेक पानी हेल
विधि दुख दे नऽ, सुख दे नऽ
गजगजे मर जीवेक पानी हेल।

आवल रहों आशा करि
से आशा तऽ लेला हरि
एकांइ-एकांइ सभे घुरी गेल
विधि दुख देल।

नाना रकम खाना-पानी
नाना रकम परिधाना
नाना रकम देखी सुनी लेल
विधि दुख देल।

ढांसा मसा मुसाक डरे
बसल आहो आंधार घारे
फनी राजा चरे लूटी लेल
विधि दुख देला।

सात सर्वना सुनी
महीपाले मने गुनी
आस लागी मारि माटी हेल
गजगजे मर जीवेक पानी हेल।
विधि दुख देल।

64
घंटा बाजेइकला

बारो पाँचे साठ मिनिटे घन्टा बाजेइकला
दिन राइत चौबीस घन्टांइ सेकेन कांटा घुरेइकला
घन्टा बाजेइकला।

मने-मने बुझी देखे, सुन न रे भाई
कन घड़ी के किना हेहेक देश-दुनियांई
एकटा घड़ीइ तीनटी कांटा, आपन गतिइं घुरतला
घन्टा बाजेइकला।

सबले उपरे घुरेसाही, सेकेन कांटाटी
सबले हेंठे घुरेसाही घन्टा कांटाटी

माझे-माझे मिनिट कांटा पाइ पलके घुरेइकला
घन्टा बाजेइकला।

तीनटी कांटा त्रिजगामी खूंटाल आहात भाई
चाभी देवे नि जानले अचल रही जाई
रोज एकबार चाभी देवाक तबेगानी चलतला
घन्टा बाजेइकला।

साठ सेकेने एक मिनट चली जाहेइक भाई
साठ मिनिटे एक घंटा बाजले जाहेइक भाई
महाभाग्य महीपाले आंइख दुइयोटा देखेकला
घंटा बाजेइकला।

65
विजया दशमी

विजया दशमी सेवा कर, रे पामरा नर
विजया दशमी सेवा कर।
मनसा मस्तके बन्दी , सरस्वती गले बांधी
शिव-शंकर बांधी आछे तोर, रे पामरा नर।

सात समुन्दर जले, जनम लेले पद्म फूले
रस चूसे बनेर भ्रमरा रे, पामर नर।
अगम सिन्धुर जले, भांसे आछे महीपाले
उमापदे श्री हरि शंकरे, रे पामरा नर।
विजया दशमी सेवा कर।

66
पढ़ते जाबो दुइ बेला

चलो पढ़ते जाबो दुइ बेला
संदीप मुनीर पाठशाला

आगे जायें गुरू-भक्ति
तार परे हइ बइ खुला
संदीप मुनीर पाठशाला।

कृष्ण बलराम जाइछे
आरो कतो जाइ छेइला
संदीप मुनीर पाठशाला।

सिदाम, सुदाम, साब सुदाम
आरो कतो दूध बाला
संदीप मुनीर पाठशाला।

सनिवारे सरस्वती, सेवा करबो सब छेइला
विद्या हले बुद्धि बाढ़े
गुचबे भवेर भोग जाला
संदीप मुनीर पाठशाला

चलो पढ़इते जाबो दुइ बेला।
लेख पढ़िये मन राखीयें
छुटी सेंसे बॉल खेला
संदीप मुनीर पाठशाला

ससऽगड़ा महीपाल,
गुचबे भवेर भोग–जाला
चलो पढ़इते जाबो दुइ बेला।

67
मिछाई जनम इ जिनगानी

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
सतगुरू सत्संग करी, महामंत्र धरा
प्रेम पिरीती विषम रीति, गुरू बिना अधोगति, भाई रे
मने–मने बुझी देखा दुयो प्राणी तरा, दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।

तिरि–पुरुषे टाना–टानी
मिछाई जनम इ जिनगानी भाई रे
नित गजगज भालो नहेइक
सन्निपातेक डेरा।

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
प्रेम-पिरिती बिसुम रीति
गुरू बिना अधोगति भाई रे
मने-मने बुझी देखा दुइयो प्राणी तरा।

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
चिन्ता छाड़ी धांधा करा।
ना न डभाइं डुबी मरा रे भाई
राइते दिने एको धांग हेलोऊ हरिनाम करा

दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।
आवल रहिया आशा करी
ना न जा सुधाई घुरी
ससऽगड़ा महीपाले महामंत्र धरा
दुइ दिन लाइ ना न लागी मरा।

68
आनन्द करा सभेकाई

खाली मुँहेक खाला-खाली,
गन्डगले दिन गेली।
आनन्द करा सभेकाई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

दुई काने दुई आना
बाकी आहोन चौदह आना।
सोलह आना जमा करा भाई
आनन्द करा सभेकाई।।

सोलह आना, सोलह कला,
सीखा रे भाई दुई बेला।
सोलह नामे समन पाराई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

महीपाले देखा-सुना
आंइख रहते ना हे काना।
महामंत्र कहा न रे भाई
निरानन्दे ना रहा भाई।।

69
जाहोऊ गनल दिन

मन रे तर पले-पले, जाहोऊ गनल दिनटा।
कन कामे तोंय भेदाल अहिस, बुझी देखे मनटा।
नर गज बिसासय, आयु कहत भाई
एक सौ आर एक, मृत्यु पेछुइं-पेंछुइं जाय।
आगु बाटे हाफाड़ी के, डांड़ाल आहोउ सिंहटा।
पाइ पल के खबर नि भाई, काइल के करे आशा
कखन किना करे हरि, बहे दुई नाशा।
निमिषे-निमिषे चले, बाजे चौबीस घंटा
कर्म करि करम राजांइ, किना देलोऊ भाई
चील सियारेक काथा सुनी, रहले भुलाई
मर्म जानी धर्मशालांइ, सीखे हरिक नामटा।
हिन्दू हेइके मुसला घेंचाइ काहां जाहीस भाई
राहुक रकम सुदर्शने, काटतोउ घेंचाटांई
महीपाले मने करि फुंकाइ लेन कानटा।
मन रे तर पले-पले, जाहोउ गनल दिनटा।

70
बिना अरे सुनता, बिना अरे देखता

बिना अरे सुनता, बिना अरे देखता
बिना अरे आनागना हो संगीरा
बिना अरे सुनता भाई, बिना अरे देखता।

बिना अरे खाता भाई, बिना अरे खाना-पीना हो संगीरा
बिना अरे खाता भाई, बिना अरे ताकता।
बिना अरे हाँसी उठेइ हो संगीरा
बिना अरे चिन्ता भाई, बिना अरे कांदता
बिना अरे हांसी उठे हो संगीरा, बिना अरे चिन्ता भाई बिना अरे कांदता
बिना अरे झुमता भाई, बिना अरे जागता।
बिना अरे बोली चाली हो संगीरा
बिना अरे हर्ता भाई, बिना अरे कर्ता।
बिना अरे महीपाले हो संगीरा
काने फूंकाइ लेता, भाई छुछाइ घुरी जाता।

71

आँइख फुटले देखबे धनटा

आँइख दुइटा फुटले जानी देखबे हामर धनटा
जिउ भइर खाय के जिनगानीटा काटीसला तोंय दिनटा।
भगवान के भक्ति करी, डाकी आने भाई
जाहाँ जेसन भग जमाइं ताहाँ तेसन खाई।
तोंय सेटा जानबे केसे बिसरिया तर मनटा।
सपने नित देखले आहिस हामर घार भाई
विपने काहाँ देखे पावबे लक के पेतियाई
तर काथाइं भुलालोऊ तर मन टा
निधनियांइ धन देखे, दिनेइ देखे तारा
धनीमाने धन हारावले दिनेइ दिसा हारा।
ससऽगरा महीपाले कहे कने गनेइ धनटा।

72

काहूँ केव नाइ रे भाई

काहूँ केव नाइ रे भाई
गुरू मंत्र ब्रह्म ज्ञान धरा सभेकाई।
जइ दिन हिंदे जीवन रहेइक, तइ दिन सभकाई
आँइख मुंदले दिनेइ आँधार, नुबी देखा भाई।
स्वर्ग-मर्त्य पाताल पुरे देखलों गटाटाई
बिना सुरूजे आँधार घारे टमड़ले ना पावाई।
नित सपने बाघे खाय, कहत सभेकाई
इ जीवन दिन राइत सबन हेइत के जाई।
पंच तत्व पंचनाम सीखा सभेकाई
ससऽगड़ा महीपाल कहत धेयाई।

73

भूत बाँधा मंतर

भाई, देखिहा नित भूते भेदाइ राखतन
भूत-बांधा मंत्र सीखा, तबे भूते छाड़तन।
भूत बांधा, भूतानी बांधा बत्तीस कोटि डाइन बांधों
डाइन बांधों, जुगिन बांधों
बत्तीस कोटि भूत बांधों, तबे करों किरतन।
डाइन बांधों, जुगीन बांधों, मड़ा मासान बांधों
गाढ़ा बांधों, ढड़हा बांधों आर बांधों सनतन।
नदी साले देखा सुना, पांच बहनि, सात बहनि आना-गना
गुरू मंतर सिखी ले नि तऽ धरि-धरि खातन।
भूत भभिसत, वर्तमाने, सुने काने
दस भूते दसाक दसाइं टानी लेले जातोन।

74
सन्निपातेक खेइल

देखा संसारे सन्निपातेक खेल
गल-गड़े नली फूली गेल
आगु हेलेइक सरद खखि
ताकर पेछुइ ऊपर धँकी
आर घड़-घड़ी संगेइ उठी गेल।

वात विकारे टाना-टानी
छाड़ी देलेइक आहार पानी
कफ सेलसांइ नाड़ी भांसी गेल।
निमछा छेरी झाड़ा-फूंका
कतेक रकम अझा-सखा
चाइरो धार चाउर छिंटी देल
गल गड़े नली फूली गेल

कतेक रकम दवाई पानी
नि सुनला रघुमनी
आर महीपालेक रही गेला सेल
गल गड़े नली फूली गेल।

75
दवाई-पानी नि सुनलेइक

देखलो मोंय भइर नयने
दवाई पानी नि सुनलेइक मरने
कतेक रकम अझा-सखा
कतेक रकम झाड़ा-फूंका
कतेक रकम सुई मारद बइद सियाने।

रग बेयाधि ग्रह फाँड़ा
काटी-कुटी नौ खाँड़ा
आर कतेक रकम हुम करत

बाभन, सखा अझा देवनाइ
उनीस घारे सभेकाई
बीसेक घारे केऊ नाई।

एकुइस घारे टानी आने मारे समने
मने करि गउद चांदे
महीपाल रोजे कांदे
देखा भाई, दाना सिराइ गेला तनु उजाने।

76
धनी हामर जीवन

हे धनी कहों तके,
ना नऽ छाड़ी राखे मके
हे धनी तोंय धनी
जीवन हामर जे।

लेइए देबों साया-साड़ी
आरो देबों सांखा-चुड़ी
हें धनी मके छाड़ी
ना जाबे नइहर जे।

नइहर गेले सबहुँ के पाले
हें धनी कनऽ ठीन ना मिले डहर जे।
जे दिन हामरा छाड़ा-छाड़ी
से दिन हेब राँड़ा-राँड़ी
हे धनी तोंय घनी जीवन संगिनी रे।

परम पुरूष जारा,
जेनिक मरम जानत तारा
हे धनी महीपाले, करत नेहर जे।

77
संइयाक ढेंकी

संइयाक ढेंकिया रे, ओ तर सांबांइ कुटे धान
कुंद-कांड़ीटांइ गिरे ठान-ठान
ढेंकीटा कहे रे भाई, मोंय मातुवाल हाथी
अष्ट अंग रहेइत के, मके दुबिइं मारे लाथी।
खूंटाटा कहे रे भाई, हामरा दुइ भाई
ढेंकीटा धान कुटे, हामरा गीत गाई
आड़ सुलिटा कहे रे भाई मोंय दुइ बिता काठ
मोंय ना रहले ढेंकी चितपाताने फांक।
घुसराटा कहे रे भाई, हामर लोहाक बांधल मुंह
हामर जूंठा सभ खात हामर चांदेक रकम मुंह
कांड़ीटा कहे रे भाई मर एक बिता गाढ़ा
मर भीतरे जेटाइ देबे, सेटाइ करो गुंड़ा।
आंटी टी कहे रे भाई मर कमर बांधा दड़ी
ढेंकीटांइ धान कूटे मोंय जड़ऽ करी
सूपटांइ कहे रे भाई मोंय कुलाइ-कुलाइ खाऊँ
हामर खावा परेइ महीपाले खाय।

78
कलियुग भेला भारी

सास के पतोहू देहेइक गारी
ससुर के पतोहू देहेइक गारी
कलियुग भेला भारी
बापे जदि कहेइक आंटे
बेटा छुटलेइक दउड़ि काटे।

बापे बेटाइं टाना-टानी
इटा हेकेइक भिनाइएक ठेन-ठानी
महीपाल कहे हारी,
गुरू बिना केसे तरी।

79
जति के आवलों हार

जति के आवलो हार
राखी देलेइं पइना फार
मके देखी, ढांपी-तपी सुतली
काहे एतेक सियान सिखली।
खजी न पावों घटी-बाटी
कहें नऽ गे लाठेक बेटी
पाछे न कि डाड़ी घाटे छाड़ली।

उठे नऽ गे जादुमनी
दे नऽ एक घटी पानी,
सुनी के बूढ़ी भालू लेखे कुंहरली
खुखुड़-मुखुड़ उठली
नेइहर बाटे चलली
एके बारे एबार महीपाल चेतली।

80
खाटे गेला नदी धार

खाटे गेला नदी धार
आना-गना करे बहुबार
रजे-रजे काटे माटी
खाली करे मुंहेक चाटी
गेला नदी धार

दे दे बाबा ठां-ठां करी
घुरे सात बार।

उलुक पेचा, दुंदू जारा
अन्धकारे देखत तारा
सारा निशि महानंदे
दिवा से अन्धकार।

महीपाल करे धरे
वाते-पिते कफे मरे
खाटे गेला नदी धार

उबुक-डुबुक नदिया
केसे हेब पार?

81
कलियुगेक जेनी

देखा रे भाई कलि युगेक जेनी
कखनो ना आदर करी, देथिन घटी पानी।

कंदउले तोंय आवले जदि,
पूछे लागतोऊ खदि नदि
कनऽ मते टक देले हेतेइन तरफसानि।

आगुए खाली ताड़ाताड़ी
पुरूष रहलेइक हा फाड़ी
ढड़हा भरी मलक मारी गेली चाटानी।

खांचिइं आहि गोबर भरल
बसे खाबे देबों जरल।
खाय उठी जूंठा हांथे, डुबाई लेत पानी।

महीपाले कहे नीति
पुरूष निन्दा अधोगति
निदान काले एसन गिलि के, यमे लेगतेन टानीं।

आश्रय लईया भच्छे
तारे कृष्ण नाहि त्याजे
बलराम हलधर महीपाले कर जरे
शमन-यंत्रण बड़ मारिबे
मन चेतन करि
मुखे बल गौर हरि रे मन
चेतन करि।

17

जय जय विष हरि,
कोटि नमस्कार करि
कृपा करे मरे
तोमाय नामे कोटि पाप हरे
हरि दया करो मरे।
हरे राम हरे राम, राम-राम
हरे हरे हरि दया करो मरे
कांतरे कृष्ट डाकि तरे
हरि दया करो मरे।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण
हरे हरे, दया करो मरे
कातरे कांगाले डाकि तरे।
हरे कृष्ण हरे राम
निताई गौर राधोश्याम
हरि दया करो मरे
तोमाय नामे हरिदास तरे।
हे गोविन्द हे गोविन्द
डाकितेछे भक्त वृन्द
हरि दया करो मरे

भक्ताधीन भगवान
राखब भक्तिमान,
हरि दया कर मरे
तोमाय बिना के राखिते पारे
हरि दया करो मरे।

जाहार एकान्त मन,
हृदय माझे वृन्दावन
हरि दया करो मरे
सोल नाम बतिस अक्षर तरे
हरि दया करो मरे।

भावुके निकटे हरि
अभावुके दूरे परि
हरि दया करो मरे
महीपाल भाभिछे अन्तरे
हरि दया करो मरे
हरि कृपा कर मरे।

18

कि मते पद उर धरि
स्याम बनवारी,

कि मते पद उर धरि
सप्त ऋषि, अष्ट वसु
दस दिसे आछेन बसि
स्याम हे नव द्वारे आछेन द्वारारि
स्याम बनवारी

एकदशे पितार संगे
द्वादशते मातार संगे
स्याम हे, त्रियदशे दखिन दुयारी
स्याम बनवारी।

महीपाल कर जरे
साधु के चरणे धरे
स्याम हे, पद रजे मुकुन्द मुरारी
स्याम बनवारी।

19

एई भव संसारे आसि
सुमेरू शिखरे बसि
अज्ञान हईले कन दोषे
ए रे मन तरबि किसे
महामंत्र पासे जेरे मन, तरबि किसे?

महामंत्र ना जानिले
जियन्ते नरके गेले
सोनार बरन तनु
गेल आपन दोषे
ए रे मन, तरबि किसे?

गुरू चरणे जार
भक्ति ना जन्मलि तार
कृष्ट ना पाइलो सेइ दोषे
ए रे, मन तरबि किसे।

मन प्राण एक करि
ना भजिले नर हरि
अकारने गेल जीवन
मनेरी लालसे
ए रे मन, तरबि किसे?

आसार आसा पार रईलो
दिन तो तोमार एमनि गेलो
सस्वागरा महीपाले
गेल घासे घुसे
ए रे मन, तरबि किसे?

20

एई भव संसारे आसि
सुमेरू शिखरे बसि
तुमि नाना माया कर निरंजन
हे अनन्त नाथ तुमि सर्व जीवेर जीवन
हे अनन्त नाथ।

अनादि अनन्त तुमि
आकाश पाताल भूमि
तुमि सर्व देव तारागण
हे अनन्त अनाथ।
किटादि पतंग पख्य यख्य रख्य
लक्ष्य लक्ष्य तुमि सबाकारे करह पालन
हे अनन्त नाथ तुमि सर्व जीवेर जीवन
संकटे तारह तूमि, तारक बले नाम जानि
तुमि जगत जीवन नारायण
हे अनन्त नाथ
दीन दयाल बन्धु, कृपा करो कृपा सिन्धु
तुमि जगत जीवन सनातन
हे अनन्त नाथ
पुरूष प्रकृति तुमि वेदे पुराणे सुनि
तुमि शेष वासुकी नाग जन
हे अनन्त नाथ तुमि सर्व जीवेर
अखण्ड मंडला कारंग व्याप्त जन चराचर
तुमि संत उरे करह धारण
हे अनन्त नाथ
ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर, इन्द्र, चन्द्र दिवाकर
तुमि अरूण वरूण हुतासन
हे अन्तनाथ आत्मारूपे सर्व भूपे

विराजित नाना रूपे
तुमि घटे-घटे घठन कारण
छय मास उत्तरायण, छय मास दक्षिणायन
तुमि पले-पले पलोके गमन
हे अनन्त नाथ, धन्य गुरू हे गोविन्द
धन्य हे राघवा नन्द
तुमि महीपाले करह कीर्तन
हे अनन्त नाथ, तुमि सर्व जीवेर जीवन।

21

तखने बलेछो तुमि, निश्चिय भजिबो आमि
भवे एइसे भूलिले एखन रे भोलामन
भवे एइसे भूलिले एखन।
जननी जठरे छिले, तखन तुमि कि बलिले
पूजिबो श्री सत्यनारायण रे भोला मन
आसिते-जाइते एका केवल मात्र पथे देखा
पथ हाराय हाराले जीवन रे भोलामन
कि जन्ये एइसेछे एथा, कि निये जावे कथा
यमालये भेटिबे शमन, रे भोलामन।
गुरूमंत्र कर सार, जनम ना हबे आर
महीपाले करह कीर्तन रे भोलामन
भवे एइसे भूलिले एखन।

22

कोथा जाछो सुन फालना
साले साले आयु शेष जानो ना
दस मासे बाल्येर ह्रास
बीस साले वृद्धिर ह्रास

त्रिश साले कान्तिर ह्रास जानोना
कोथा जाछो सुन फालना।
चल्लीस साले मेयेदेर ह्रास
पंचास साले त्वकेर ह्रास

साठ साले दृष्टिर ह्रास जानोना।
कोथा जाछो सुन फालना।
शत साले इन्द्रे ह्रास
शतह्रासे मनेर हरास

सबीसे मनेर आशा थाकेना
कोथा जाछो सुन फालना
आयुर्वेद धन्वन्तरी महीपाल कर जरी
कि कारणे महामंत्र लिछोना

कि गुरूमंत्र लिछोना
कोथा जाछो सुन फालना।

23

अन्तमन भुइलो ना रे
भुइलो ना माया जाला
धाइले कि धन मिले?
कर्म ना करिले
मन भुइलो ना रे।

भुलिये बारो, बसिये तेरो
जदि बा करिते पारो
ना पारिले जा आछे कपाले
मन भुइलो ना रे।

षोल जाले आछे ढाका
तार उपरे विधिर लेखा
से लेखा कि जाबेक जले धूले
अन्तमन तुइलो ना रे।

गुरू मंत्र कर सार
घुचिबे मन आंधाार
महामंत्र कहे महीपाले
मन भुइलो ना रे।

24

नवम दशम मास मायेरी गर्भेते बास
छल करि प्रसव हइले
हरि नाम भूइले गेले।
बाल्यकाले करे खेला।
माता-पितार घुचे जाला
युवकाले माता-पिता छाड़िले
हरि नाम भूइले गेले।
जखन हय वृद्ध काल
बेइसे बूढ़ा टिपे जाल
निज जाले आपनि बाझले
हरिनाम भुइले गेले।
निदान समय काले
भने महीपाल बले
शमन एइसे धरिबेक गले
हरिनाम भुइले गेले
छल करि प्रसव हइले
हरिनाम भुइले गेले।

25

एई धरती धरार धूला
पंचभूते करेन खेला
धुलाय सागर धुलाय नगर रे

हरिबल मन, धुलार गुने चर के घर
साधु शिक्खा कर
बल हरिनाम, साधु संगे नृत्य कर
साधु शिक्खा कर।
धनेर मरा सबकाई देखे
जीवन मरा केउ नाई देखे
सप्त ऋषि अष्टवसु रे
तार मध्ये बसे चोर
साधु शिक्खा कर।
बाल्यकाले ननी चोरा
युवाकाले नारी चरा
वृद्धकाले भक्त चरा रे
भोलामन ताथे हइले दिगम्बर
साधु शिक्खा कर।
माटिर घरे नढीर वासा
देख कखन कि हई दसा
एई घटि हेलाइ गेले रे
आसी बा चौरासी घर
साधु शिक्खा कर।
हरिनामे बड़ई भांति भांति
जेमन बेनुई थाके कान्ति
महीपाल कय छूइले दिये रे
जेमन इच्छा तेमन कर
साधु शिक्खा कर।

26

भव बम बम भव बम
बम बम हरे कर डम्बरूर बाजेहर

हरे कर डम्बरूर बाजे हरे
हरे कर डम्बरूर बाजे

भैरब बम बम बाजे हरें
शिव साजे जटाजूठ गंगा फनि साजे
भव बम बम

गले दले हाड़ माला
त्रिशूल विराजे
भव बम बम..........

भस्म मेइखे आछे अंगे
डम्बरूर बिराजे, भव्य बम-बम

आंका बांका अंग, शिखर विराजे
कमर आंठा बाघ छाले, श्मशान विराजे
भव बम बम

विश्व हेतु महीपाले सदाय विराजे
भव बम बम, भवबम बम हरे।

27

आमि अति मूढ़ मति, दाउ गुरू ज्ञान
तोमा बिने एई संसारे, नाहिं जानि अन्य जन
दाऊ गुरू ज्ञान।

अज्ञाने थाकिबे जेइ
वैकुण्ठे कि जावे सेइ?

धर्म जरे धर्म राज गेल
बैकुण्ठ भुवन दाऊ गुरू ज्ञान

जेइ जन ज्ञानी थाके
संसारे जानिबे ताके

ज्ञानी छिलो तुलसी गोसांई
सृष्टि करे रामायण
दाऊ गुरू ज्ञान।

गुरूर करन करे जेई
पुष्प रथे जाबे सेई
गणेश चन्द्र किबा जाने
गुरूर करन
दाऊ गुरू ज्ञान।

28

गुरू जीवनेरी धन
गुरू बिने एई संसारे
के आछे आपन
गुरू जीवनेरी धन।

अनादि अनन्त गुरू
तुमि तो भाई कल्पतरू
आमारे चैतन्य कर
हय बड़ अज्ञान
गुरू जीवनेरी धन।

सुन रे पामरा मन
हाराय ना मूल्यधन
जन्मिले पूजिबो बले सत्यनारायण
गुरू जीवनेरी धन।

एई भव संसारे हरि
नाम लेऊ भाई नर-नारी
सकल जीवनेर उरे आछे
देख नारायण
गुरू जीवनेरी धन।

ससऽगरा महीपाले
एई दीन गणेश बले
एई भव संसारे
गुरू पार करो जेमन
गुरू जीवनेरी धन।

29

महापापी तरान्त गुरू
आछि संसारे
सत्य त्रेता द्वापरेते
कलियुग भवतारे
आछि संसारे।

पापी छिलो एकोजन
उद्धारिलो दुई जन
तेमनि तुमि उद्धार कर
बलि हे गुरू तरे
आछि संसारे।

एई संसारे महापापी
छिलो देख वाल्मीकि
महामंत्र जपते बलेन नारद आर ईश्वरे
आछि संसारे
महापापी तरान्ति गुरू।

महापापी पार पाबे ना
एई संसारे गुरू बिना
गुरू हर्ता गुरू कर्ता
गुरू जीवनेर तारन करे
आछि संसारे।

गणेश अति मूढ़ मति
नाहि जाने गुरू भक्ति
ससगरा महीपाले
दिवा निशी विनय करे
आछि संसारे।

30

मनेर मतन मानुस पेलाम ना
मनेर मतन मानुस पेइले
किछुते आर छाड़बो ना।

मानुस राजा, मानुस प्रजा
मानुस देहे आछे मजा
मानुस छाड़ा अन्य जने
से किछु मिले ना।

मनेर मतन मानुस पेइल ना।
मानुस हर्ता, मानुस कर्ता
मानुस बठे करन कर्ता मानुस करे
चोर डाकाती मानुस हई साधुजना।

आत्मा रूपे आछे भगवान
खुजले कि आर पाबे संधान
भक्त अधीन भगवान
भक्त छाड़ा थाके ना

गणेश चन्द्र मर मति
नाय जाने गुरू भक्ति
ससगरा महीपाले
महामंत्र लिलोना।

31

कृष्ण प्रेमे जेई जन हयेछे काना
सेतो सुने ना आर कारो माना रे
भोलामन नयक कि ई सेई जना
कृष्ण प्रेमे हये छिलो हिरण्य काना

नरसिंह अवतारे विदाय कये
से जन प्रहलाद छिलो तार छेइले
कृष्ण प्रेम छाड़े ना हयेछे कान
कृष्ण प्रेमे काना छिलो आर देवेन्द्रेर

कृष्ण कृष्ण बल्ल भाइ
कृष्ण मिले ना दिक निशि करे जेई
गुरू मंत्र जपना
भक्त अधिन भगवान
रे भोलामन भक्त मन छाड़ा थाकेना
हयेछे काना, गणेश चन्द्रेर एई विनती

ससागड़ा महीपाले गुरूर तार मति
गुरू बिना पार पाबि ना रे
हरि बल मन गुरू भज सर्वजना
हयेछे काना
कृष्ण प्रेमे जेई जन हयेछे काना।

32

कतो दिने जाबे गुरू आमार जांतना?
दिवा निशि भाभी आमि सेइ मनष्कामना
मने करि एई संसारे
आछि एई भारत भीतरे
महापापेर पापी आमि
आमाय पार करो ना, जाबे यातना।
ए भव संसारे आसि
गृह माया जाले भांसि

अन्तरेते डाकि आमि
पार करो पतित जना जाबे यातना।
महा दुखेर दुखि आमि
पार करो हे शूल पानि

माता पिता जनम दिलो

गणेश चन्द्र भाभे मने
पार हबोना गुरू बिने

ससागड़ा महीपाले
महामंत्र भुइलो ना
जाबे यातना।

33

यदि गुरू दया ना करे
तबे केने गुरू रूप धरे
गुरू छिलेन गोरांग
आर छिलेन नित्यानन्द।
दयामई छिलेन ताराइ भाई दया करे
यदि गुरू दया ना करे

गुरू हइलेन हर्ता–कर्ता
गुरू हइलेन करन कर्ता
गुरू हइलेन ब्रह्मा विष्णु
गुरू हइतो भाई तारन करे
यदि गुरू दया ना करे

गेरूवा बसान करे
दक्षिण भक्षण करे
तारे तुमि धर गुरू

से कि तोमाय तारन करे
गणेश चन्द्र भाभी बले
ससागरा महीपाले
ए भव संसारे गुरू पार करे अधमे रे।

34

कांदोना कांदोना माँ गो,
कांदले कि फिरे असिबे
बिदाय दे माँ बेला उगे जाई।

अगाध समुद्र जल
तेमनि नामेर नाईखे जल रे
भने महीपाले कय केमने तरिबे रे
मनोबांछा पूर्ण हबे।

36

तखने बलछे तुमि
निश्चय भजिबो आमि
सुन-सुन उरे भोलामन
नारी गेले आर कखन
सुन-सुन उरे भोलामन

गुरू वन्दे सच्चिदानन्द
अन्ध बिना सकारण
सुन-सुन उरे भोलामन
ना चिनिले नारायण
गुरूर चरणे जाबो
भक्ति जन्मिलो तार
सुन-सुन उरे भोलामन।

जन्म गेलो अकारण
आश्रय लईया भजे
तारे कृष्ट नाहि त्याजे
सुन-सुन उरे भोलामन
आर सब जाय अकारण
महामंत्र लिबो बइले
ऐसे आछो महीपाले
सुन-सुन उरे भोलामन
हेला ते हाराय रतन।

आत्म-कथ्य



नाम : हरदेव नारायण सिंह

पिता : स्व. अर्जुन सिंह, पूर्व मुखिया, लगाम पंचायत, सिल्ली प्रखण्ड

माता : स्व. दुर्गा देवी

स्थायी पता : ग्राम- कोंचो, डाकघर- टुटकी नवाडीह, थाना-सिल्ली जिला- राँची (झारखण्ड)

वर्तमान पता : लोअर बर्दवान कम्पाउण्ड, डाकघर- लालपुर, राँची 834001

शिक्षा : एम.ए., बी.एड्., एल-एल. बी., पीएच. डी. (मगध)

वृत्ति : प्राध्यापन
पूर्व रीडर (कुरमाली), स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

कृतियाँ :
1. English Grammar : A Study 1967
2. कुरमाली बोली के मुहावरे और लोकोक्तियाँ 1978
3. कुरमाली लोककथाओं की कथानक रूढ़ियाँ : एक अनुशीलन 2001
4. एहे डहरे 2008
5. सृष्टिधरेक गीत (सम्पादित) 2008
6. कुरमाली निबन्ध 2010
7. कुरमाली साहित्य : विविध संदर्भ 2010
8. कुरमाली लोककथाएँ 2013
9. कुरमाली मुहजरा आर आहना 2013

सम्पादन :
- झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध-संस्थान, राँची द्वारा प्रकाशित 'कुरमाली लोक साहित्य' के प्रधान सम्पादक।
- केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा प्रकाश्य 'कुरमाली-हिन्दी-अंगरेजी शब्दकोश' के प्रधान सम्पादक।
- यूनिसेफ, झारखण्ड के तत्वावधान में प्रकाशित 'कुरमाली- हिन्दी सचित्र बाल शब्दकोश' के प्रधान सम्पादक।
- लगभग नौ स्मारिका एवं कई पत्रिकाओं का सम्पादन।
- केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा कुरमाली भाषा पर निर्मित वृत्त-चित्र में अहम भूमिका।

आलेख :
- स्थानीय एवं देश की विविध पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी, कुरमाली और अंगरेजी में शताधिक आलेख प्रकाशित।
- आकाशवाणी के राँची केन्द्र से हिन्दी और कुरमाली में विविध विषयों पर अनेकानेक वार्ताएँ, कहानी एवं कविता प्रसारित।

प्रकाशक:
कुरमाली भाषा परिषद्, राँची

मुल्य 130:-